मई-६१

जीवन का सौभाग्य

विश्व की अद्वितीय अद्भुत कलाकृति

मन्त्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठा युक्त

पारद महालक्ष्मी

(पांच तोले से भी ज्यादा वजन)

卐 सर्वथा मुफ्त में 卐

- ● पारद महालक्ष्मी की घर में स्थापना ही जीवन का सौभाग्य माना जाता है।
- ●● अन्न धन भण्डार, ऋण मुक्ति एवं धन वर्षा के लिए दुर्लभ महालक्ष्मी विग्रह।
- ●●● जीवन में समस्त प्रकार के सौभाग्य एवं लक्ष्मी प्राप्ति के लिए अद्वितीय अवसर।
- ●●●● जीवन में पहली बार पारे से निर्मित **"महालक्ष्मी विग्रह"** जिसकी प्रशंसा तो स्वयं कुबेर, इन्द्र एवं विष्णु ने की है।
- ●●●●● आप अपने घर में गौरव के साथ स्थापित कर सकते हैं।

कैसे प्राप्त करें

- * यदि आप पत्रिका सदस्य हैं, तो इस उपहार को सर्वथा मुफ्त में प्राप्त कर सकते हैं।
- ** धनराशि अग्रिम न भेजें, केवल एक कागज पर लिख कर भेज दें, कि आप "पारद महालक्ष्मी" विग्रह प्राप्त करना चाहते हैं।
- *** सन् १९९२ से अगले पांच साल के लिए **"पंच वर्षीय पत्रिका सदस्यता स्कीम"** के अन्तर्गत मात्र ५२५)रु० तथा ९)रु० डाक व्यय जोड़ कर उपरोक्त दुर्लभ विग्रह सुरक्षित रूप से आपको भेज देंगे।
- **** वी०पी० छूटने पर आपको अगले पांच साल का पत्रिका सदस्य बनाकर सम्बन्धित रसीद भिजवा देंगे, इस प्रकार आप अगले पांच वर्षों तक पत्रिका शुल्क भेजने के झंझट से बच जायेंगे।
- ***** और यह विश्व का दुर्लभ **"महालक्ष्मी विग्रह"** आपको सर्वथा मुफ्त में प्राप्त हो जायगा।

नोट : ● **यह सुविधा भारत में रहने वाले पत्रिका सदस्यों को ही प्राप्त हो सकेगी।**

●● **इस पत्रिका के प्राप्त होने के एक महीने भीतर-भीतर आदेश भेजने वाले को ही यह "महालक्ष्मी विग्रह" भेजा जा सकेगा, इसके बाद आदेश आने पर उन पर विचार नहीं किया जा सकेगा।**

वर्ष–११

अंक–५

मई-१९९१

* * * * * * * * * * * * *

: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग,

हाईकोर्ट कालोनी,

जोधपुर–३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : ३२२०९

आनो भद्राः कृतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोम्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

।। ॐ सद्यौ जातं गुरुवैं प्रपन्नास्मि परिपूर्णं सदाश्रियै
वै धीमहि तन्नो गुरुवैं प्रचोदयात् ।।

हे गुरुदेव ! आप दयालु हैं, कृपा के सागर हैं, मुझे सिद्धियों के क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्रदान करें, मैं श्रेष्ठ व्यक्तित्व बन कर पूरे ब्रह्माण्ड में छा जाना चाहता हूं ।

दिव्य अलौकिक कैसेट सेट

- ★ जो बोयेगा, वही काटेगा
- ★ जो सोयेगा, वह खोयेगा
- ★ जो साधना करेगा, वो सिद्धि प्राप्त करेगा !

विचारोत्तेजक, ज्ञान से भरपूर, एक-एक रहस्य को हटाते हुए, आपकी भ्रान्तियों का निवारण करने वाली, आपको जीवन में सही मार्ग हेतु प्रेरित करने हेतु ये नयी कैसेटें, जिसमें पूज्य गुरुदेव की अमृत वाणी का एक-एक शब्द सीधा हृदय में उतरता है।

ये शब्द कुण्डलिनी के ब्रह्मरन्ध्र दशम द्वार "सहस्रार" से उद्बोधित हुए हैं।

एक-एक शब्द को ध्यान से सुनो, अपनी चित्तवृत्तियों को नियन्त्रण में कर जिस प्रकार जप करते हो, अनुष्ठान करते हो; उसी प्रकार अपने पूजा स्थान में शान्त मुद्रा में बैठ कर, नेत्र बन्द कर सुनो, प्राणों में स्पन्दन होगा, मस्तिष्क में झनझनाहट उत्पन्न होगी, फिर एक द्वार खुल जायेगा, कुछ ऐसा दिखने लगेगा, जिसके लिए तुम भटक रहे थे, तुम्हारी समस्याएं तुम्हें सरल दिखने लगेंगी।

१-जीवन पग-पग साधना है

जीवन को कैसे जिया जाय, सम्बन्धों में क्या भाव रखा जाय, मित्रों से कैसा व्यवहार हो, जीवन का हर कदम उन्नति की ओर बढ़े, मन की सत्ता स्वयं के हाथों में हो, जीवन के आदर्श प्राप्त हों, इन्द्रियों के सभी सुख प्राप्त हों, सब मनोरथ पूर्ण हों, शान्ति का अनुभव हो, और जीवन में किसी को कुछ दे सकें, ऐसी स्थिति हो ये प्रश्न नहीं हैं, यह तो जीवन निर्माण की विधि है, जो कि पूज्य गुरुदेव के अमृत वचनों से आपको कुछ बना सकती है।

२-महालक्ष्मी गायत्री

॥ ॐ महालक्ष्म्यै विद्महे महाश्रियै धीमहि तन्नो शक्तिः प्रचोदयात् ॥

यह मंत्र कुछ शब्द नहीं हैं, इसके पीछे तो गायत्री साधना का पूरा विधान है, हर अक्षर, हर शब्द एक गहरा अर्थ लिये है, विधि से किस प्रकार सम्पन्न किया जाय, और कुछ प्रत्यक्ष अनुभव हो, ऐसा सम्पूर्ण विवेचन पूज्य गुरुदेव के श्री मुख से !

३-हठ योग रहस्य

इसने बड़ी ही विचित्र भ्रान्तियां फैला रखी हैं, तथाकथित योगियों, तांत्रिकों की निःसंदेह यह विद्या महान है, इसका भी क्रम है, और यह जीवन तत्व से जुड़ी है, क्या हठ योग से सिद्धि प्राप्त की जा सकती है ? साधना किस प्रकार करें ? विवेचन, रहस्य, सार, कर्म- विधान जो आपको एक नये संसार में ही ले जायेगा ।

४-निर्वाण तंत्र की तांत्रोक्त गुरु साधना

यह साधना शिष्य को अपने गुरु से किस प्रकार मिला देती है, और अपने गुरु से पूर्णता, साधक किस प्रकार प्राप्त कर सकता है, गुरु की शक्तियां क्या हैं ? गुरु का तांत्रोक्त पूजन कैसे सम्पन्न किया जाय, ये सब सम्मिलित है इस अद्वितीय अनूठी कैसेट में, जिसके ज्ञान के बारे में अभी तक सब कुछ छिपा-छिपा है ।

५-प्राण शक्ति योग

यह योग प्राण तत्व को जाग्रत करता है, और जब प्राण तत्व जाग्रत हो जाता है, तो व्यक्ति 'अहं ब्रह्मास्मि' की स्थिति में पहुंच जाता है, स्वयं शक्तिमान हो कर शक्ति का उपयोग कर सकता है, अपने आपको दूसरों से अलग कर सकता है, वह साधना के चतुर्थ स्तर पर पहुंच जाता है, पातंजली योग सूत्र पर आधारित ।

प्रत्येक कैसेट का मूल्य मात्र—२१) रु०

सम्पर्क : मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

कुछ दुर्लभ संग्रहणीय कैसेट

* गुरु गीता
* सिद्धाश्रम
* स्वामी सच्चिदानन्द
* सिद्धाश्रम महात्म्य
* कुण्डलिनी नाद ब्रह्म
* गुरु मोरो जीवन प्रेम अधार
* शिव सूत्र
* शिव पूजन
* पारदेश्वर शिवलिंग पूजन एवं रसेश्वरी दीक्षा
* ध्यान योग
* कुण्डलिनी योग
* महालक्ष्मी साधना
* विशेष दीपावली साधना
* चामुण्डा दीक्षा
* सतोपंथी दीक्षा

* शक्तिपात दीक्षा
* विशेष लामा मंत्र
* अक्षय पात्र साधना
* गुरु पादुका पूजन
* काया कल्प साधना
* षोडश अप्सरा साधना
* पराविज्ञान
* पारद विज्ञान
* अणिमा सिद्धि
* लघिमा सिद्धि
* अष्ट सिद्धि
* ॐ मणि पद्मे हुं
* साधना सूत्र
* समाधि के सात द्वार
* सिद्धाश्रम प्रश्नोत्तर
* कुबेर पति शिवशक्ति साधना
* तंत्र रहस्य
* मृत्योर्मा अमृतं गमय
* शिष्योपनिषद
* दुर्लभोपनिषद
* कठोपनिषद
* गुरु हमारो गोत्र है
* गुरु गति पार लगावै
* प्रेम धार तलवार की
* प्रेम न हाट बिकाय
* घूंघट के पट खोल री
* अकथ कहानी प्रीत की
* सूली ऊपर सेज पिया की
* मैं गर्भस्थ बालक को चेतना देता हूं— (२ भाग)
* ऋणहर्ता लक्ष्मी गणपति प्रयोग (२ भाग)
* मां भगवती जगदम्बे शत्-शत् वन्दन
* महासरस्वती स्वरूप साधना
* महालक्ष्मी स्वरूप साधना
* महाकाली स्वरूप साधना
* मैं सिद्धाश्रम में स-शरीर विचरण कर सकता हूं
* मैं अपना पूर्व जीवन देख रहा हूं
* साधना, सिद्धि एवं सफलता
* काहि विधि करूं उपासना
* मैं खो गया तुम भी खो जाओ
* हिप्नोटिज्म रहस्य
* लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग (तीन भाग)
* स्वर्ण देहा अप्सरा साधना (तीन भाग)
* पाशुपतास्त्रेय प्रयोग (तीन भाग)
* संध्या आरती
* दुर्लभ गुरु भजन (कैसेट नं०-२ से—
* १४ नं० कैसेट तक)
* निखिलेश्वरानन्द चिन्तन
* क्या आपके शरीर में आपकी ही आत्मा है
* प्रेम पंथ अति कठिन है
* पिव बिन बुझे न प्यास

नोट : ● प्रत्येक कैसेट का मूल्य—२१) रु० ●● अग्रिम धनराशि भेजने की जरूरत नहीं है, आप पत्र में कैसेट का नाम लिख कर भेज दें, हम वी.पी. से सम्बन्धित कैसेट आप तक भेजने के लिए वचनबद्ध हैं।

●●● सम्पर्क : मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राज०)

निखिलेश्वरानन्द

खड़ाऊ

पाद-पूजन

स विधि प्रयोग

गुरु शब्द का तात्पर्य है, वह स्थितिजनक स्वरूप जो बन्धन के मुख्य कारण अज्ञान, दोष रूपी हृदय ग्रन्थी को भेदने में समर्थ हो, वही "गुरु" है।

गृणाति उपदिशति धर्ममिति गुरुः गिरति ज्ञानमिति गुरुः ।
यद्वा गीयते स्तूयते देव गन्धर्वादिभिरिति गुरुः ॥

अर्थात् जो जीवन का सम्पूर्ण धर्म बताये, ज्ञान रूपी ज्योति से अज्ञान का अन्धकार दूर करे, जिसकी देवता, गन्धर्व इत्यादि स्तुति करें, वही देव गुरु है।

गुरु शिष्य की समस्त बाहरी वृत्तियों को, ये बाहरी वृत्तियां जो उसे विनाश की ओर ले जाती हैं, उन वृत्तियों को शान्त कर, भीतर की वृत्तियां अन्तरआत्मा की वृत्तियां जाग्रत कराते हैं, जिससे वह शिष्य अमृतमय हो कर पूर्ण पुरुष बन सकता है।

दुःखी से दुःखी व्यक्ति को गुरु के पास आकर शान्ति प्राप्ति होती है और यदि दुःखी, निर्बल, धनहीन जीव को भी जब गुरु शिष्य रूप में अंगीकार कर लेते हैं, तो उस शिष्य को भी परम प्रसन्न, जीवन के पूर्ण आनन्द के अनुभव योग्य बना देते हैं, यही गुरु की प्रतिग्रह शक्ति की महिमा है।

शिष्य के मन में जब भाव आ जाता है, कि इष्ट की वाणी और गुरु की वाणी से एक ही अनुभूति है, उनका दिव्य शरीर, इष्ट रूप में ही कल्याण निहित बना है, तभी वह सफलता की आशा कर सकता है, यदि एक क्षण के लिए भी उसके मन में यह विचार आया कि श्री गुरुदेव मानव हैं, महापुरुष हैं, लौकिक हैं, तो यह निश्चय जानिये, कि साधक उसी बिन्दु पर खड़ा है जहां से उसने प्रस्थान किया, अपने लक्ष्य की ओर एक कदम भी नहीं बढ़ाया।

नर-वद् दृश्यते लोके, श्रीगुरूः पाप कर्मणा ।
शिव-वद् दृश्यते लोके, भवानि! पुण्य कर्मणा ॥

अर्थात् श्री गुरुदेव—मानव, महात्मा, महापुरुष, केवल दुष्ट विचार धारा वाले दम्भियों को ही दिखाई देते हैं जो कि अपने तर्क के जाल में उलझे रहते हैं, श्रेष्ठ कार्य की ओर अग्रसर भक्ति, श्रद्धा से परिपूर्ण साधक

शिष्य को तो वे प्रत्यक्ष शिव रूप में ही दृष्टिगोचर होते हैं।

गुरु पादुका

गुरु अपने बाह्य शरीर में होते हुए भी आन्तरिक रूप से पूरे ब्रह्माण्ड को समाये रहते हैं, और इसको टिकाने का आधार केवल गुरु चरण ही हैं, इसीलिए लिखा है कि—

पृथिव्या यानि तीर्थानि तानि तीर्थानि सागरे।
सागरे सर्व तीर्थानां गुरुस्य दक्षिणे पदे॥

अर्थात् संसार के सभी तीर्थ और पुण्य क्षेत्र गुरु के चरणों में साकार रूप से उपस्थित होते हैं, इसीलिए गुरु के चरणों का जल जिसको 'चरणामृत' कहा जाता है, स्वीकार किया जाता है और इसीलिए गुरु के चरणों में धारण की हुई खड़ाऊं या पादुका स्वयं गुरु का साक्षात् स्वरूप बन जाती है. और उसे अपने पूजा स्थान पर उसी प्रकार से स्थापित करना चाहिए, जिस प्रकार से हम सम्मान के साथ गुरु को अपने घर में श्रेष्ठ आसन पर बिठाते हैं।

भगवान शिव "महेश्वरी तन्त्र" में पार्वती को समझाते हुए कहते हैं, कि गुरु पादुका पूजन करने से साधक की सोलह कलाएं स्वतः विकसित होने लगती है, ये सोलह कलाएं निम्न प्रकार से हैं—

१-मूलाधार, २-स्वाधिष्ठान, ३-मणिपुर, ४-अनाहत, ५-विशुद्ध, ६-आज्ञा, ७-बिन्दु, ८-कला पद, ९-निर्वाधिका, १०-अर्धचन्द्र, ११-नाद, १२-नादान्त, १३-शक्ति, १४-व्यापिका, १५-समना, १६-उन्मना,।

"कुलार्णव तन्त्र" में लिखा है—

है कोई शिष्य, जो इस गुरु आज्ञा-धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाये

शिष्य के लिए संसार में गुरु के अतिरिक्त कुछ भी नहीं हैं, वह बार-बार कहता है—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वर, गुरु साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवै नमः॥

वह अपने गुरु में ही सारा विराट स्वरूप देखता है, कि मैं ऐसे महान गुरु का शिष्य बन कर धन्य हो गया।

शिष्य के लिए श्रद्धा, समर्पण एवं आज्ञा ही आधार है, दीक्षा ग्रहण करने वाले शिष्य का तो दायित्व और भी अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि अब उसने एक बन्धन पूरी तरह तोड़ कर, नया बन्धन जोड़ा है, यह गुरु कृपा है, कि वे उसे क्या आज्ञा प्रदान करते हैं।

आज पूज्य गुरुदेव ने अपने सभी शिष्यों का आह्वान किया है कि—

— **है कोई ऐसा शिष्य जो घर-परिवार छोड़ कर सन्मार्ग में सेवा और समर्पण से कार्य करने को तत्पर हो ?**

— **है ऐसा कोई शिष्य, जो सब बन्धन तोड़ कर पूरे भारतवर्ष में गुरु-वाणी के प्रचार-प्रसार के लिए अपने आपको समर्पित कर दे ?**

— **है ऐसा कोई शिष्य, जो आकर खड़ा हो जाय, और कहे—मुझे केवल आज्ञा दें, बस, मुझे और कुछ नहीं चाहिए ?**

महारोग महोत्पाते महादेवि ! महाभये ।
महापदि महापापे स्मृता रक्षति पादुका ।।
तेनाधीनं स्मृतं ज्ञानं दृष्टं दत्तं च पूजितं ।
जिह्वायां वर्तते यस्य श्रीपरा-पादुका-स्मृतिः ।।

अर्थात् बड़े से बड़े रोग में, बड़े से बड़े कष्ट में, बड़ी से बड़ी आपत्ति में, बड़े से से बड़े संकट में, जो शिष्य श्री गुरु पादुका का पूजन एवं स्मरण करता है, तो उसकी सब बाधाएं दूर हो जाती हैं ।

गुरु पादुका पूजन

इस अद्वितीय, जीवन को बदल देने वाली साधना का मूल आधार मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त गुरु पादुका है, किसी भी गुरुवार के दिन साधक स्नान कर शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण करें और अपने पूजा स्थान में उत्तर दिशा की ओर आसन बिछाकर बैठें तथा सामने एक लकड़ी के पीढ़े पर पीला वस्त्र बिछाकर एक ताम्र पात्र में गुरु पादुका स्थापित करें, तत्पश्चात् पूजन कार्य प्रारम्भ करें ।

शरीर में गुरु स्थापन प्रयोग

सर्व प्रथम अपने बांएं हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से शरीर के अंगों पर जल स्पर्श करें तथा निम्न मन्त्र बोलें—

ॐ कूर्माय नमः
ॐ आधार शक्तये नमः
ॐ पृथिव्यै नमः
ॐ धर्मायै नमः
ॐ ज्ञानाय नमः
ॐ सवित्रालाय नमः
ॐ ऐश्वर्याय नमः
ॐ वैराग्याय नमः
ॐ अनेश्वर्याय नमः
ॐ अनन्ताय नमः
ॐ सर्वतत्वात्मकाय नमः
ॐ आनन्दकन्द कन्दाय नमः
ॐ प्रकृतमयपत्रेभ्यो नमः
ॐ विकारमयकेशरेभ्यो नमः
ॐ पंचाशर्णाबीजाड्यकर्णिकायै नमः

अब अपने सामने गुरु चरण पादुका के आगे पांच चावल की ढेरी बनाएं और प्रत्येक पर एक-एक सुपारी रखें और केशर की बिन्दी लगाकर निम्न मंत्र उच्चारण करें—

ॐ गुं गुरुभ्यो नमः
ॐ पं परम गुरुभ्यो नमः
ॐ पं परात्पर गुरुभ्यो नमः
ॐ पं परमेष्ठि गुरुभ्यो नमः
ॐ पं परापर गुरुभ्यो नमः

अब साधक खड़ाऊं का पूजन प्रारम्भ करें, खड़ाऊ पर केशर कुंकुम गुलाल तथा पुष्प अर्पित करें और अपने दोनों हाथ जोड़ कर गुरु का ध्यान करते हुए १०८ बार गुरु पादुका मंत्र का जप करें—

यह गुरु आज्ञा-धनुष उठाने के लिए कौन शिष्य आता है, यह परीक्षा नहीं है, यह आमंत्रण है, पीछे की तुम सोच समझ कर आना, आगे की तो गुरुदेव सोच लेंगे, उसके बारे में तुम्हें चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है ।

यदि तुम अपने बन्धनों से मुक्त हो कर, निश्छल भाव से, केवल आज्ञा शब्द ही प्राप्त करने के लिये अधिकारी समझते हो, तो ऐसे शिष्य को आमंत्रण है ।

ध्यान रहे केवल आना ही तुम्हारे हाथ में है, जाना नहीं, कोई हिसाब-किताब, गणित जोड़ कर मत आना, अपना सारा हिसाब छोड़ कर आना ।

गुरु पादुका मन्त्र

।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोहं हंसः स्वरूप निरूपणहेतवे श्री गुरुवे नमः ।।

इसके पश्चात् दोनों पादुकाओं को स्पर्श करें और अपने हाथों को नेत्रों से लगाएं तथा पुनः अपने स्थान पर स्थापित कर एक माला गुरु मन्त्र का जप करें—

।। ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ।।

इसके पश्चात् अपने पूरे परिवार के साथ गुरु आरती सम्पन्न करें और गुरु पादुका के सामने चढ़ाये गये नैवेद्य अर्थात् प्रसाद को ग्रहण करें।

इन पादुकाओं को पात्र में ही अपने पूजा स्थान में स्थापित रखें तथा नित्य प्रति पूजन अवश्य करें, जब भी साधक किसी कार्य के लिए घर से बाहर निकले तो गुरु चरण पादुका स्पर्श करके अपने कार्य हेतु रवाना हो।

नियमित साधना पूजा करने वाले साधक, शिष्य को हर समय अपने गुरु की उपस्थिति का साक्षात् अनुभव होता है और उसे हर कार्य में उचित निर्देश आशीर्वाद एवं पूर्णता की प्राप्ति होती है। ●

मेरे शिष्यों,

आज तुमसे कुछ खुली-खुली बातें करने की इच्छा है, इसमें कुछ कड़वी बातें भी होंगी और कुछ मीठी भी।

मैं जो प्रश्न लिख रहा हूं, उसका मुझे उत्तर भेजने की आवश्यकता नहीं है, अपनी आत्मा पर हाथ रख कर पूछ लेना, उत्तर मेरे पास पहुंच जायेगा।

— क्या तुमने शिष्यत्व की दीक्षा प्राप्त की है ?
— क्या तुम शिष्य होने के सारे कर्त्तव्य निभाते हो ?
— क्या तुम वर्ष में एक बार भी गुरुधाम आते हो ?
— क्या तुम प्रत्येक गुरु पूर्णिमा पर उपस्थित होते हो ?
— क्या तुम अपने दिन प्रतिदिन के दैनिक क्रिया कलाप में साधना, भक्ति, गुरु ध्यान, गुरु आज्ञा, के सम्बन्ध में कुछ करते हो ?
— क्या तुम गुरु अमृत वचनों की इस पत्रिका के प्रचार प्रसार हेतु नियमित रूप से कुछ समय देते हो ?
— क्या तुमने सेवा और समर्पण में कोई विशेष कार्य किया है ?
— क्या तुम महीने में एक दिन भी अपने जैसे शुद्ध विचारों वाले ईश्वर प्रेमी सज्जनों के साथ बैठ कर, अन्य पत्रिका सदस्यों के साथ बैठ कर ध्यान, जप, साधना, का विशेष कार्य करते हो ?
— क्या तुम अपने अन्य गुरु भाइयों से निरन्तर मिलते रहते हो ?
— क्या तुम महसूस करते हो, कि गुरु हर समय तुम्हारे साथ है ?

मैं उत्तर जानता हूं, लेकिन मुझे विश्वास है, कि जिनके इन सभी प्रश्नों के उत्तर "हां" में नहीं हैं, वे विचार अवश्य करेंगे, मुझे उन शिष्यों को भी अपने पास बिठाना है। ★

लक्ष्मी के मूल स्वरूप
की
साधना का रहस्य

कमला तंत्र

से ही
लक्ष्मी सिद्धि संभव है

कमला अर्थात् लक्ष्मी आधारभूत सिद्धि दात्री देवी है, लक्ष्मी साधना जीवन निर्माण में महत्वपूर्ण है, जिसके बिना न चिन्तन, न मन, और न ही तन को पूर्णता मिल पाती है।

लक्ष्मी की सफलता के साथ पूर्ण सिद्धि-जीवन का इन्द्रधनुष है, इस कमला साधना के तंत्र स्वरूप का विशेष चैतन्य रूप, जो हर साधक के लिए फल प्रदायक है—

एक बार नारद ऋषि समस्त लोकों का भ्रमण करते हुए विष्णु लोक पहुंचे उन्होंने भगवान, विष्णु के साथ विराजमान महामाया भगवती कमला के दर्शन किये तो पूर्ण भक्ति से गद्-गद् हो कर उसकी स्तुति करने लगे —

"हे भगवती! तुम लक्ष्मी स्वरूपा हो, तुम्हारी कृपा से मुझको सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो, हे लक्ष्मी ! आप कृपा कर मेरी वाणी और मेरे मन को सही रास्ते पर गतिशील करें, मुझे ओज, तेज, बल, बुद्धि, क्षमता और वैभव प्राप्त हो, महामाया कमला को पाकर स्वयं आदिदेव भगवान तीनों रूपों में प्रगट हो कर समस्त लोकों का सृजन, पालन, और संहार करते हैं, वही आद्या शक्ति मेरा कल्याण करें, जिनकी कृपा दृष्टि से कमल से उत्पन्न ब्रह्मा तथा अन्य प्रमुख देवता शक्ति प्राप्त करते हैं, जो वर देने वाली भगवती लक्ष्मी प्रसन्न हो कर सुख प्रदान करती हैं, उस महामाया, पूर्ण लक्ष्मी भगवती कमला को मैं प्रणाम करता हूं, और जो प्राणी सिर झुका कर आपको हृदय से नमन करते हैं, उनको कभी भी दुर्गति नहीं होती, ऐसे साधक निश्चय ही

पूर्ण सिद्धि प्राप्त कर अनन्त लोक तक वैभव सम्पन्न हो कर धन, धान्य सम्पन्न, प्रसिद्धि, कीर्ति और सुख को प्राप्त करते हैं, आपका क्या वर्णन करूं, आप को हजार-हजार बार नमस्कार है।"

वास्तव में लक्ष्मी की साधना तंत्र मार्ग से ही संभव है, और यह कमला साधना के द्वारा सहज है, कमला तंत्र में तो स्पष्ट रूप से लिखा है, कि जीवन में अतुलनीय धन-वैभव प्राप्त करने के लिए कमला साधना आवश्यक है, क्योंकि इस साधना के द्वारा ही जीवन में वह सब कुछ प्राप्त हो सकता है, जो कि आज के मनुष्य को चाहिए।

सबसे बड़ी बात यह है, कि कमला साधना एक तरफ जहां पूर्ण मानसिक शान्ति और सिद्धि प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर इसके माध्यम से अतुलनीय वैभव, और अनायास धन प्राप्ति होती रहती है, तंत्र में इसके द्वादश नाम स्पष्ट हुए हैं, यदि कोई साधक केवल इन द्वादश नामों का उल्लेख या उच्चारण ही नित्य कर लेता है, तो भी उसे पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो जाती है, फिर यदि कोई कमला जयन्ती के अवसर पर एक बार भली प्रकार से कमला साधना सम्पन्न कर लेता है, तो उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव रह ही कैसे सकता है?

कमला के द्वादश नाम हैं —

१-महालक्ष्मी, २-ऋणमुक्ता, ३-हिरणमयी, ४-राजतनया, ५-दारिद्रय हारिणी, ६-कांचना, ७-जय, ८-राजराजेश्वरी, ९-वरदा, १०-कनकवर्णा, ११-पद्मासना, १२-सर्वमांगल्य युक्ता।

कमला तंत्र साधना प्रयोग

यदि तांत्रिक दृष्टि से कमला साधना सम्पन्न की जाती है, तो निश्चय ही साधक आश्चर्यजनक उपलब्धियां अनुभव करने लगता है, तंत्र क्षेत्र के जानकार इस तंत्र को विशेष महत्व देते हैं, एक प्रकार से यह निश्चित है, कि इस गोपनीय तंत्र साधना को जो पूर्ण निष्ठा के साथ सम्पन्न कर लेता है, उसे जीवन में समस्त सुख, वैभव, और सौभाग्य प्राप्त हो जाता है, दरिद्रता तो हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो जाती है, अनायास धन प्राप्ति की संभावनाएं बन जाती हैं, और साधक अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त करता हुआ सही अर्थों में वैभव युक्त बन जाता है।

> जिनके पास आचार अर्थात् संयमित, नियमित व्यवहार है, जिनके पास विचार अर्थात् सोचने समझने की बुद्धि है, ग्रहण करने की क्षमता है, जो कर्म भाव को सात्विक रूप से देखते हैं, जिनकी श्रद्धा, भक्ति तीव्र होती है, लक्ष्मी का वास वहीं होता है। —नारद संहिता-अ०-४/२६

१२-६-९१ लक्ष्मी अर्थात् कमला साधना हेतु अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध मुहूर्त है, इस दिन साधक को चाहिए कि प्रातःकाल उठ कर स्नान कर अपने पूजा स्थान में बैठ जांय, और फिर साधना प्रारम्भ करें, साधना प्रारम्भ करने से पूर्व पूजन सामग्री अपने सामने रख दें, जिसमें जलपात्र, केसर, अक्षत, नारियल, फल, दूध का प्रसाद, पुष्प, आदि हो, कमला साधना में अष्टगन्ध का प्रयोग ज्यादा महत्वपूर्ण माना गया है, अतः साधकों को चाहिए कि वे पहले से ही अष्ट गन्ध प्राप्त कर उसे घोल कर अपने सामने रख दें।

कमला यंत्र

तांत्रोक्त कमला साधना का आधार **"कमला यंत्र"** ही है, क्योंकि यह यंत्र पूर्ण रूप से प्रभाव युक्त और सिद्धि-दायक है, कमला तंत्र में यंत्र के बारे में बताया है, कि वह पूर्ण विधि के साथ षट्कोण सहित अष्ट दलों से युक्त महत्वपूर्ण यंत्र हो।

यह यंत्र ताम्र पत्र पर अंकित हो, साथ ही साथ "कमला यंत्र" **में बताया गया है, कि जब तक** "तंत्रोद्धार" **सम्पन्न यन्त्र न हो, तो उसका प्रभाव नहीं होता, तंत्रोद्धार में बारह तथ्य स्पष्ट किये हैं, बताया है**

कमला यन्त्र

पर नियंत्रण प्रदान करने वाला हो, ११-'ऐं' बीज के द्वारा वैभव प्रदान युक्त हो, तथा १२-रमा बीज के द्वारा सिद्धिदायक हो।

वास्तव में ही कमला यंत्र पूर्ण रूप से सिद्ध करना अत्यन्त पेचीदा और श्रमसाध्य कार्य है, इस प्रकार का यंत्र पूजा स्थान में स्थापित कर साधना प्रारम्भ करें, ऐसा यंत्र जहां उनके स्वयं के जीवन के लिए तो सौभाग्यदायक रहेगा ही, आने वाली कई-कई पीढ़ियों के लिए भी यह यंत्र भाग्योदयकारक बना रहेगा।

साधना दिवस के दिन इस विशिष्ट यंत्र को जल से फिर दूध दही, घी, शक्कर, पचामृत से स्नान करा कर पुनः शुद्ध जल से धो कर लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर प्रतिष्ठापित करें, फिर साधक एक अलग पात्र में **"गणपति विग्रह"** की स्थापना करें, दूसरे एक बाजोट
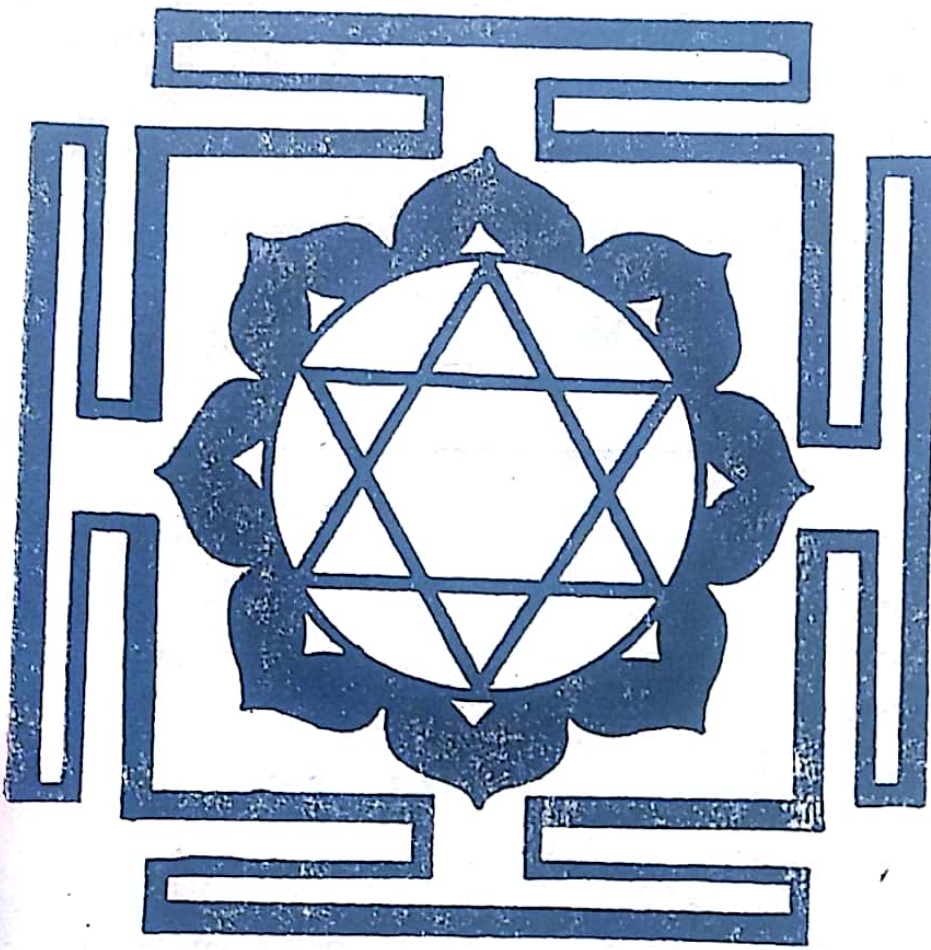
कि इन तत्वों को सम्पन्न करके ही यंत्र का प्रयोग करना चाहिए।

कमला तंत्र के अनुसार—

१-यह शुद्धता के साथ विजय काल में अंकित किया जाना चाहिए, २-इसका पूर्ण रूप से मंत्रोद्धार हो, ३-यह वाग् बीज से सम्पुटित हो, ४-लज्जा बीज के द्वारा इसका **अभिषेक** हो, ५-श्रीं बीज के द्वारा **यह** मंत्र सिद्ध हो, ६-काम बीज के द्वारा यह वशीकरण युक्त हो, ७-पद्मबीज के द्वारा यह प्रभाव युक्त हो, ८-जगत बीज के द्वारा यह शीघ्र सिद्धिदायक हो, ९-रूप बीज के द्वारा यह आकर्षण युक्त हो, तथा १०-मनुबीज के द्वारा मन

पर ताम्र पात्र में **"लघु नवग्रह यंत्र"** स्थापित करें, अब गणपति का पूजन कर नवग्रह पूजन तथा बीच में एक थाल रख कर उस पर नया पीला वस्त्र बिछा दें, कपड़े के ऊपर सिन्दूर से सोलह बिन्दियां लगायें, सबसे ऊपर चार बिन्दी, फिर उसके नीचे चार बिन्दियां लगा दें, इस प्रकार चार लाइनों में सोलह बिन्दियां स्थापित हो जाती हैं, तत्पश्चात् प्रत्येक बिन्दी पर एक लौंग तथा एक इलायची रख कर इसका अष्ट गन्ध से पूजन करें और फिर हाथ जोड़ कर लक्ष्मी का ध्यान करें, और **"कमला"** का आह्वान करें कि वे आपके स्थान पर अपनी शक्ति सहित प्रतिष्ठित हों, फिर अपने सामने **"ॐ शंखायै नमः"** मंत्र से शंख स्थापित करें और फिर पुष्प और अक्षत चढ़ा दें।

इसके पश्चात् मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त कमला यंत्र को जहां सोलह बिन्दियां लगाई हुई हैं, उसके ऊपर पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास के साथ स्थापित कर दें और अष्ट गन्ध से इस यंत्र पर सोलह बिन्दियां लगा दें, ये सोलह बिन्दियां सोलह लक्ष्मी की प्रतीक हैं।

इसके बाद दोनों हाथों में पुष्प तथा अक्षत लेकर निम्न मंत्र से अपने घर में भगवती कमला का आह्वान करते हुए यंत्र पर पुष्प-अक्षत समर्पित करें।

कमला आह्वान मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कान्हेश्वरी सर्व-जन-मनोहारिणी, सर्व-मुख-स्तम्भिनी, सर्व-स्त्री पुरूषाकर्षिणीं, बिन्दी शंखेनात्रोटय त्रोटय सर्वशत्रूना भंजय-भंजय द्वेषि दलय-दलय निर्दलय-निर्दलय सर्व-शत्रूणां स्तम्भय मोहनास्त्रेण द्वेषि उच्चाटय उच्चाटय सर्व वशं कुरु कुरु स्वाहा, देवि सर्व सिद्धेश्वरी कामिनी-गणेश्वरि इहागच्छ इह तिष्ठ ममचेषकल्पितां पूजां गृहाण मम सपरिवारं रक्ष रक्ष नमः।

इसके बाद साधक सामने शुद्ध घृत का दीपक लगावें उसका पूजन करें, तत्पश्चात् सुगन्धित अगरबत्ती प्रज्ज्वलित करें, ऐसा करने के बाद साधक इस यंत्र पर कुंकुम समर्पित करें, पुष्प तथा पुष्प माला पहनावें, अक्षत चढ़ावें, तथा नैवेद्य का भोग लगावें, सामने ताम्बूल, फल, और दक्षिणा समर्पित करें।

तत्पश्चात् **"कमला माला"** का पूजन करना चाहिए, यह कमला माला विशेष मंत्रों से सिद्ध और **सूर्य उपनिषद** से संगुफित होती है, जो कि वास्तव में ही अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है, इस माला को पहले से ही प्राप्त करके रख देना चाहिए।

इसके पश्चात् साधक घी के सोलह दीपक लगा लें, कमला मंत्र का जप प्रारम्भ करें, इसमें प्रथम माला का विधान अलग है, साधना सिद्धि में कमला के अर्पण हेतु

मरना तो एक दिन सभी को है, लेकिन जिस गृहस्थ के पास 'कमला सिद्धि' नहीं है, उसे तो रोज-रोज तिल-तिल कर मरना पड़ता है।

—शुक्ल वेद-अ०-१६/४३

देवी के दस स्वरूपों में, भगवान विष्णु के पास कमला अर्थात् लक्ष्मी का प्रमुख स्थान है, जहां लक्ष्मी है वहां नारायण की कृपा भी सम्पूर्ण रूप से है।

"कमल बीज" विशेष महत्वपूर्ण हैं, १०८ कमल बीज प्रथम माला के मंत्र जप के समय, एक मंत्र बोल कर एक कमल बीज भगवती कमला को अर्पित करते रहें, इसके पश्चात् शेष १५ माला उसी स्थान पर आसन पर बैठ कर करें।

कमला मंत्र

॥ ॐ ऐं ईं ह्रीं क्लीं हसौ जगत्प्रसूत्यै नमः ॥

जब सोलह माला मंत्र जप हो जाय, तब भगवती लक्ष्मी की विधि विधान के साथ आरती सम्पन्न करें, और उस यंत्र को पूजा स्थान में ही स्थापित कर लें, तथा कमला माला को इस यंत्र के सामने या यंत्र के ऊपर स्थापित कर दें, भविष्य में जब भी कमला मंत्र का जप करना हो, तो इसी माला से उपरोक्त मंत्र की एक माला फेरें।

कमला साधना साधक शुक्ल पक्ष के प्रत्येक प्रथम बुधवार को ऊपर दी गई विधि के अनुसार सम्पन्न कर सकता है, साधना हेतु बार-बार सामग्री बदलने की आवश्यकता नहीं है।

वस्तुतः यह मंत्र और यह तांत्रिक प्रयोग अपने आपमें ही दुर्लभ और महत्वपूर्ण है, साधकों को चाहिए कि वे अवश्य ही इस साधना को सम्पन्न करें और अनुभव करें कि आज के युग में भी साधनाएं कितनी शीघ्र और अचूक फल प्रदान करने में समर्थ हैं। ●

वेद तो आधार हैं
सम्पूर्ण ज्ञान के

वेदों से लिये गये कुछ अनूठे प्रयोग
जो स्वयं सिद्ध हैं

वेदों में सम्पूर्ण ज्ञान समाया हुआ है, जीवन से संबंधित कोई भी पक्ष हो, वेदों में उसकी व्याख्या विस्तार से की गई है, इसीलिए वेदों को मुख्य रूप से चार भागों में बांटा गया है–ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, और अथर्ववेद।

प्रार्थना, पूजा, संस्कार, कर्त्तव्य, धर्म, अधिकार, आत्मा, परमात्मा, ब्रह्म, कार्य, गृहस्थ धर्म, संन्यास धर्म, शिक्षा, अर्थ प्राप्ति, विवाह संस्कार, संतान, संबंध, जीवन धर्म, सभी क्षेत्रों का विवेचन वेदों में विस्तार से किया गया है, इतने अधिक सुगठित एवं सम्पूर्ण रूप से व्याख्या की गई है, कौन सा कार्य किस रूप से सम्पन्न करना चाहिए, कौन सा कार्य करने से हानि है, कौन अच्छा है, कौन बुरा है, जीवन में क्या होना चाहिए और कुछ पाने के लिए क्या करना चाहिए, सम्पूर्ण रूप लिखित है।

वेद और आज का मनुष्य

प्राचीन ग्रन्थों की आलोचना का आजकल एक रिवाज सा चल पड़ा है, बिना पढ़े, बिना समझे, बिना प्रयोग में लाये वेदों को, उपनिषदों को आजकल **"आउट डेटेड"** मान लिया गया है, यह केवल शिक्षा का प्रभाव नहीं, इसमें संस्कारों का भी बहुत बड़ा स्थान है, बालक जैसा अपने मां बाप को करता देखेगा, उसी रूप में आचरण करेगा, युग के अनुसार अर्थ बदलते हैं, उसी रूप में वेदों की व्याख्या आज के युग के अनुसार की जाय और उसे प्रयोग में लाया जाय, तो निश्चित रूप से जीवन ही बदल जायेगा, दृष्टि के ऊपर आये हुए जाले हटाने की आवश्यकता है, जिससे हम आधारभूत सत्य को पहिचान सकें, और सत्य छिपता भी नहीं है, और वेद तो आधार ग्रन्थ हैं, साधना-उपासना की सम्पूर्ण विधियों का आधार वेद ही हैं।

पाठकों के हितार्थ उनके जीवन की दिन-प्रतिदिन की आवश्यकता को देखते हुए, कुछ विशेष प्रयोग नीचे स्पष्ट किये जा रहे हैं, ये प्रयोग पूर्ण रूप से सिद्ध हैं और कोई भी साधक इन्हें सम्पन्न करे तो सफलता निश्चित रूप से प्राप्त होती है, मन में श्रद्धा और सत्य भाव अवश्य ही होना चाहिए।

'मनु संहिता' के अनुसार जो वेद का ज्ञान नहीं रखता, उसके अनुसार अभ्यास अर्थात् आचरण नहीं करता, केवल उसे ही दुःख, पीडा और मृत्यु प्राप्त होती है, वेदों का आधार जीवन में सम्पूर्णता प्राप्त कर परम पिता परमात्मा में विलीन होना है, लेकिन इस ऐहिक लोक अर्थात् जीवन में सिद्धि हेतु भी कुछ विशेष प्रयोग लिखे गये हैं, नीचे दिये गये प्रयोग "नील सूक्त" ग्रंथ से लिये हैं, और यह तो एक छोटा सा स्वरूप है।

आगे पाठकों हेतु वेदों का क्रमबद्ध स्वरूप स्पष्ट किया जायेगा –

१-भूत प्रेत, दुष्टात्मा निवारण प्रयोग

जिस पर बीते वही जान सकता है, कि यदि किसी व्यक्ति पर भूत-प्रेत, दुष्टात्मा का प्रभाव हो जाता है, तो
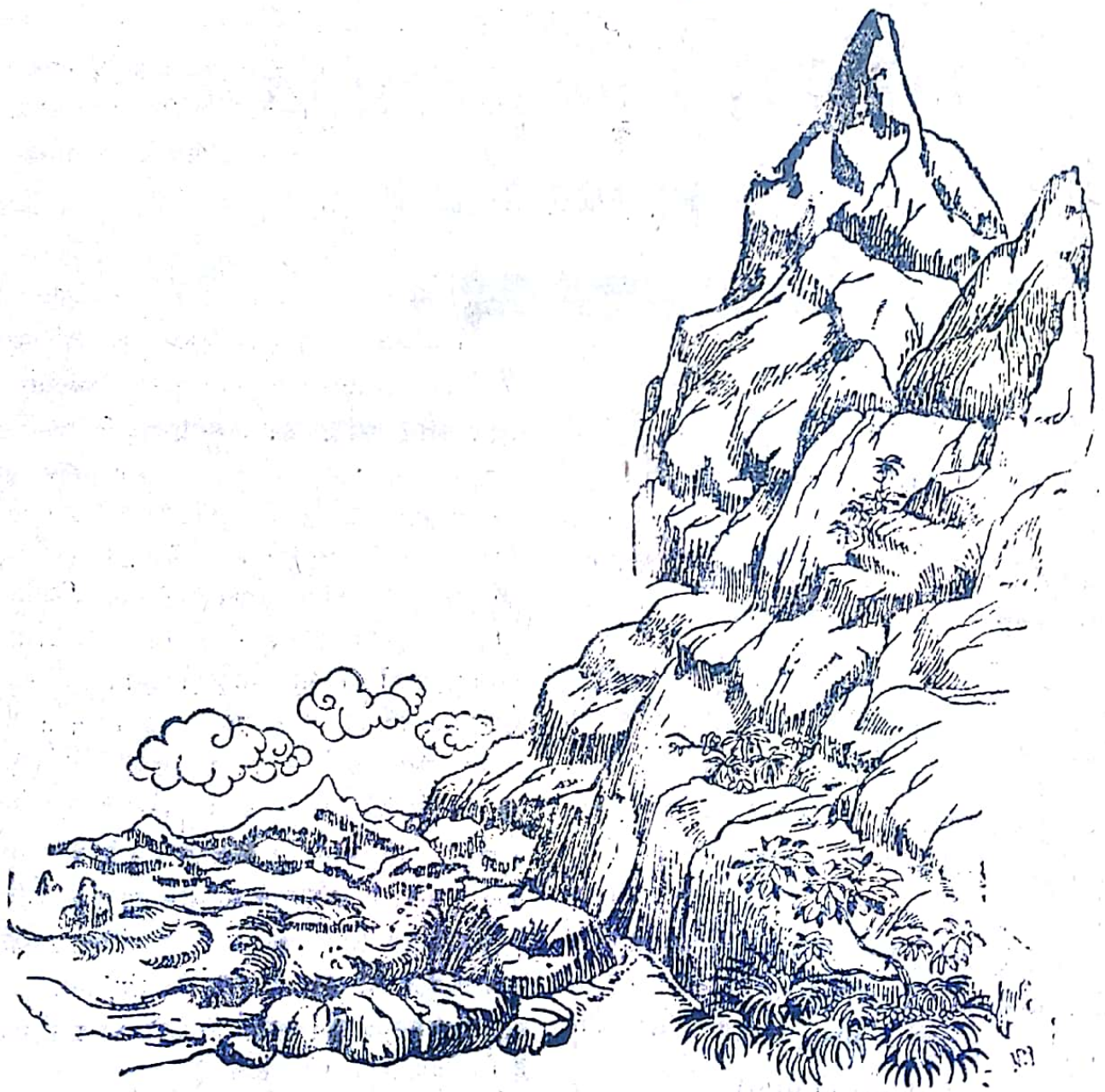
क्या हालत होती है, और तांत्रिक प्रयोग कितना अधिक खतरनाक होता है।

शनिवार के दिन प्रातः जल्दी उठ कर साधक स्नान कर, काले वस्त्र धारण करें, और जिस व्यक्ति पर भूत-प्रेत इत्यादि का प्रभाव है, उसे भी अपने सामने बिठा दें, एक ओर धूप लोबान इत्यादि जला दें, फिर सरसों के दानों की छोटी-छोटी २१ ढेरी बनाएं और प्रत्येक ढेरी पर एक **"क्रत्वा तत्वं"** स्थापित करें, यह चमकदार रत्न स्वरूप एक विशेष हकीक पत्थर जैसा होता है, और अब नीचे लिखे गये मंत्र का उच्चारण पांच बार करें, तथा सरसों, जिस व्यक्ति की बाधा दूर करनी हो उस पर, फेंक दें, तथा क्रत्वा तत्वं उसके सिर पर पांच बार फेर कर दक्षिण दिशा में फेंक दें।

मंत्र

।। अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्योभिषक् ।।

इस प्रकार सभी २१ ढेरियों का प्रयोग करें, और प्रत्येक बार पांच बार मंत्र बोलें, इस प्रकार करने से कैसी भी भूत-प्रेत से संबंधित बाधा हो, निश्चित रूप से दूर हो जाती है।

२-परिवार में बालकों की रोग बाधा दूर करने का प्रयोग

सोमवार के दिन प्रातः स्नान कर, पीले वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान में शान्त भाव से बैठ कर भगवान शिव का ध्यान कर **१०८ कमल बीज** अपने सामने रखें, और प्रत्येक कमल बीज पर एक-एक पुष्प की पंखुंडी रखें, **अष्ट गन्ध** से पूजा करें, और नीचे लिखे गये मंत्र की ११ माला का जप उसी स्थान पर बैठ कर करें।

मंत्र

।। मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकम्मा न ।।

मंत्र जप के पश्चात् पीले कपड़े में कमल बीज तथा पुष्प बांध कर परिवार में रोगी बालक के सिरहाने के नीचे रख दें, तो रोग बाधा दूर होने लगती है, और यह प्रयोग नियमित रूप से प्रति माह सम्पन्न किया जाय तो बालकों में निरोगता तथा परिवार में पीड़ा शान्ति रहती है।

३- अभीष्ट धन प्राप्ति प्रयोग

अभीष्ट का तात्पर्य है इच्छाजन्य., अर्थात् जो कार्य करें, उसी के अनुरूप फल प्राप्ति हो और यही संबंध द्रव्य अर्थात् धन इत्यादि से जुड़ा है, प्रयास के उपरान्त भी उचित फल प्राप्ति नहीं होना, एक कुंठा को जन्म देता है, **शुक्ल वेद** के अनुसार ऐसे व्यक्ति को सात बुधवार तक विशेष प्रयोग सम्पन्न कर यज्ञ सम्पन्न करना चाहिए।

किसी भी बुधवार को प्रातः अपने पूजा स्थान में **"सुदर्शन शंख"** एक चावल की ढेरी पर स्थापित करना चाहिए, उसके सामने चार स्वास्तिक बना कर प्रत्येक पर **श्री यंत्र का चित्र अथवा छोटा ताम्र यंत्र** स्थापित करना चाहिए, और फिर कुंकुंम केसर इत्यादि पूजा सम्पन्न करने से पहले गुरु ध्यान-पूजन कर शुभ कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

मन्त्र

।। नमो वः किरिके भ्यो ।।

यह प्रयोग सात बुधवार तक निरन्तर 'सिद्धि माला' से सम्पन्न किया जाय, और सातवें बुधवार के दिन ही हवन सम्पन्न किया जाय, हवन में साधक मिट्टी की वेदी बनाकर अथवा हवन पात्र में अग्नि जलाकर तिल से सम्पन्न करें, ग्यारह माला मंत्र की आहुति सम्पन्न करें, कैसा भी कार्य अटका हो, पैसा अटका हो, पैसे से संबंधित कोई विशेष कार्य पूरा नहीं हो रहा हो तो इस प्रयोग से शीघ्र ही अनुकूलता प्राप्त होती है।

४- रोग पीड़ा शान्ति के वैदिक साधन

सही बात तो यह है, कि आज के युग में आधे से अधिक लोग किसी न किसी प्रकार की शारीरिक अथवा मानसिक पीड़ा से ग्रस्त हैं, किसी को पेट संबंधी पीड़ा है, तो किसी को निरन्तर सिरदर्द, तो किसी को कोई अन्य पीड़ा, इलाज कराते-कराते थक जाते हैं, लेकिन पीड़ा बनी ही रहती है, ऐसे में वैदिक उपाय अत्यन्त श्रेष्ठ है।

शनिवार के दिन सम्पन्न किये जाने वाले इस प्रयोग को सायंकाल के पश्चात् करना चाहिए, प्रयोग के समय तांबे का एक बड़ा लोटा अच्छी तरह से साफ कर उसमें शुद्ध जल भर दें, जल पात्र के भीतर रोग नाशक सिद्ध "अश्विनी कंकण" रख दें।

यह अश्विनी कंकण, अश्विनी कुमार मंत्रों से सिद्ध एक विशेष कड़ा होता है, अब जिस व्यक्ति से संबंधित रोग पीड़ा हेतु प्रयोग किया जा रहा है, यदि वह व्यक्ति स्वयं मंत्र कार्य सम्पन्न कर सकता है, तो अति उत्तम है, अन्यथा कोई दूसरा उसके नाम का संकल्प भर कर कार्य कर सकता है।

मन्त्र

।। नमः सिकत्याय च
प्रवाह्यायच नमः ।।

इस मन्त्र का १०८ बार जप करने के पश्चात् वह जल पीपल के पत्ते से रोगी के ऊपर छिड़का जाय, और थोड़ा जल रोगी स्वयं ग्रहण करे, कितनी भी भयंकर पीड़ा हो, कितनी भी पुरानी पीड़ा हो, दूर होती ही है, इसमें कोई संदेह नहीं।

वेदों से लिये गये ये चार उदाहरण तो वेदों के असंख्य सागर में से चुने गये तीन-चार रत्न हैं, वेद तो समुद्र की भांति रत्न भण्डार हैं, जिसमें से चुनने वाला, प्रयोग में लाने वाला, और उनके अनुसार कार्य करने वाला चाहिए इसीलिए लिखा है, कि "अथ विज्ञायैतानि यो धीते तस्य वीर्यवत्" **अर्थात् जो इस विज्ञान को जान कर कर्म करता है, वही वीर्यवत् अर्थात् सबल श्रेष्ठ बन पाता है, और पूर्ण फल प्राप्त करता है।**

सौ-सौ कार्य
खुद-ब-खुद सम्पन्न हो जाते हैं
इस अद्वितीय
मणि माला
से

माला का महत्व प्रत्येक प्रकार के मंत्र जप में विशेष है, सा[illegible] के लिए यह प्राणों के समान प्रिय वस्तु है, माला जप के समय मन को नियंत्रण में रखते हुए शक्ति को एक ही दिशा में प्रवाहित करती रहती है, और एक ही दिशा में प्रवाह होने से जप अनुष्ठान के कार्य में सफलता मिलती है, बिना माला मंत्रानुष्ठान करना उसी प्रकार है जैसे आत्मा के बिना देह, माला के अभाव में जप प्राण-हीन है, इसीलिए हर अनुष्ठान में अलग-अलग प्रकार की माला का विधान आवश्यक रहता है।

मणि माला का तात्पर्य है, जो मणि रूप में पिरोई गई हो, जिसमें सभी स्वर-वर्ण मणि रूप में गुंथे हुए हों, मणि माला में मूलाधार से आज्ञा चक्र पर्यन्त सूत्र रूप में विद्यमान है, इसीलिए मणि माला द्वारा किया गया किसी भी मंत्र का जप निष्फल नहीं जा सकता।

विजयप्रद वशीकरण माला

माला के १०८ मनके केवल मनके नहीं हैं, इसमें स्वर क्रम के सभी वर्ण विद्यमान हैं, और विजयप्रद वशीकरण माला षोडश संस्कार युक्त हिरण्यगर्भ मंत्रों से सिद्ध होने के कारण अपने नाम के अनुरूप ही साधक को फल प्रदान करती है, इस विशिष्ट माला के पूजन का, धारण करने का विशेष विधान है, जिसे भली-भांति समझ कर करना चाहिए।

पूजा विधान

रविवार के दिन प्रातः शुभ मुहुर्त में मणि माला को अपने पूजा स्थान मे पीपल के नौ पत्ते ला कर, अष्ट दल कमल की भांति आठ पत्तों को रखें, नौवां पत्ता बीच में रखें, तथा उस पर माला स्थापित करें, स्थापित करने से पहले माला को **"सद्योजात"** मंत्र का उच्चारण कर शुद्ध जल से धो दें —

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
भवे भवे नाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः॥

इसके पश्चात् **"वामदेव मंत्र"** का उच्चारण कर मणि माला पर चन्दन, अगर, गन्ध, पुष्प, इत्यादि चढ़ायें–

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रूद्राय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः। बलाय नमो बलप्रमथाय नमः सर्वभूत-दमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ।।

इस समय जिस कार्य की विशेष इच्छा हो; उसका स्मरण करना चाहिए, अब **अघोर मंत्र** का उच्चारण करते हुए एक ओर घी का दीपक तथा दूसरी ओर अगरबत्तियां जलायें।

ॐ अघोरेभ्यो थ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः
सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः ।।

किसी भी प्रकार का दोष हो, इस अघोर मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण करने से दूर हो जाता है, अब आत्म शक्ति हेतु भगवान शिव का स्मरण करते हुए पांच बार तत्पुरुष मंत्र का उच्चारण करें और माला पर कुंकुंम चढ़ायें —

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय
धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।।

अब सिद्धि माला के सर्वाधिक महत्वपूर्ण **ईशान मंत्र** का जप १०८ बार करना चाहिए—

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे
अस्तु सदाशिवोऽम् ।।

अपने इष्ट देव का ध्यान करते हुए माला का पूजन कर **इष्ट मंत्र** का जप करें और प्रार्थना करें—

माले माले महामाले सर्वतत्व स्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ।।

माला में सम्पूर्ण रूप से शक्ति तत्व विद्यमान है, और इसे जाग्रत करने हेतु लाल रंग के पुष्पों से पूजा करते हुए १०८ बार **विजयप्रद आकर्षण मंत्र** का जप करें—

।। ॐ ऐं श्रीं अक्षमालायै नमः ।।

इस प्रकार पूजा सम्पन्न कर माला को उठा कर अपने मस्तक से तथा नेत्रों से लगायें तथा प्रार्थना करें कि—

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां सर्वसिद्धिप्रदा मता।
तेन सत्येन मे सिद्धिं देहि मातर्नमोऽस्तुते ।।

जब भी कोई विशेष कार्य हेतु जाना हो, तो ऊपर लिखी प्रार्थना बोल कर माला धारण कर लें, कार्य निश्चय ही सिद्ध होता है, इस विशेष माला को हमेशा धारण न करें, यह हाथ से गिरनी नहीं चाहिए, यदि इसका सूत पुराना हो जाय तो माला मंत्र का जप करते हुए पुनः गूंथ दें।

इस विजय माला का महत्व इतना अधिक है, कि शक्ति का कोई भी अनुष्ठान इस माला से मंत्र जप करते हुए किया जाय, तो वह साधना अवश्य ही पूर्ण होती है—

- **शरीर में कोई व्याधि हो, तो इसे धारण करने से वह पीड़ा जड़-मूल से ही समाप्त हो जाती है।**
- **यदि विद्यार्थी इस माला को धारण करें और इस माला से "सरस्वती मंत्र" का जप करें, तो विद्या में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।**
- **वशीकरण हेतु, किसी को अपने आकर्षण में बांधने हेतु इस माला का प्रभाव सर्व सिद्ध है, गले में यह माला धारण कर अनजान व्यक्ति के सामने चले जांय, तो वह आपके अनुकूल हो जाता है।**
- **यदि कोई कन्या इस माला से "शिव गौरी मंत्र" का जप करती है तो छः महीने के भीतर-भीतर विवाह का योग बन जाता है, और इच्छित वर की प्राप्ति होती है।**
- **यह माला "अनंग साधना", अनंग शक्ति, का सम्पूर्ण स्वरूप है, इसे धारण करने से बल, वीर्य, तेज, की वृद्धि होती है।**
- **इस मणि माला को धारण करते ही कितनी ही चिन्ताएं हों, मन को शान्ति प्राप्त होती है, और साधक सही दिशा में चिन्तन कर अपनी समस्या का उचित हल प्राप्त कर सकने में समर्थ होता है।**

आओ

ध्यान के महासागर में उतरें

शक्ति क्रम को व्यवस्थित करें

साधना, सिद्धि और समाधि केवल क्रिया के तीन भेद हैं, एक लम्बे रास्ते के पड़ाव हैं, जिस पर साधक को, शिष्य को, चलना हैं, और इस मार्ग में केवल एक ही तत्व जीवन्त बनाये रखता है, और वह है ध्यान, ध्यान है डूब जाने की प्रक्रिया, अपने आपको भुला देने की प्रक्रिया, इसके लिए केवल कोशिश ही नहीं अपितु निरन्तर अभ्यास के साथ-साथ अदम्य उत्साह, लालसा, इच्छा होनी भी आवश्यक है।

जीवन यात्रा का प्रथम महत्वपूर्ण क्रम साधना है, और यह साधना विभिन्न रूप, विभिन्न प्रकार, विभिन्न माध्यम से सम्पन्न की जा सकती है, जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वभाव के अनुरूप भोजन ग्रहण करता है, किसी को किसी वस्तु विशेष में विशेष रस आता है, हो सकता है एक को मिठाई ज्यादा पसन्द हो, दूसरे को नमकीन, कोई सादे वस्त्रों को पसन्द करता है, तो कोई रंग बिरगें वस्त्रों को, व्यक्ति की इस भिन्न-भिन्न रुचि के समान ही साधना का मार्ग है, साधना के लिए आवश्यक है साधक होना, और साधक कौन ? जो किसी चीज को साधने लगे, और वह सध जाय।

कभी किसी बन्दूकची को निशाना लगाते देखा है, वह अपनी बन्दूक में एक छोटे से बिन्दु को देखते हुए निशाने को देखता है, उसके शरीर की, मन की, नेत्रों की पूरी एकाग्रता उस बिन्दु पर है, क्योंकि उसे मालूम है कि इस 'प्वाइन्ट' से हो कर मैं अपना निशाना साध लूंगा, वह केवल निशाने की ओर नहीं देखता और न ही अपनी उंगली की ओर देखता है, ये सब तो 'साइड' क्रियाएं हैं, जो अपने आप सम्पन्न हो जाएंगी।

क्या आप साधना करते हैं ?

जैसा मैंने ऊपर लिखा साधना करोगे, तभी सिद्धि अर्थात् फल प्राप्त होगा, केवल फल-फल करते हुए साधना नहीं हो सकती, साधना तो एक निरन्तर चलने वाला क्रम है, हो सकता है, तुम्हारी साधना का मार्ग लम्बा हो, क्योंकि हर एक के लिए सिद्धि अर्थात् फल अलग-अलग स्थान पर स्थित है, हो सकता है तुम साधना करते-करते भटकते हो, हो सकता है तुम साधना के इस मार्ग पर विश्राम ज्यादा करते हो, एक साधना की फिर रुक गये, फिर कुछ महीनों बाद किसी और फल की इच्छा हुई, और दूसरी साधना करने बैठ गये, तो मेरे भाई तुम्हें साधना का फल, सिद्धि कैसे मिलेगी ? मेरा तो बस इतना ही कहना है कि चलते जाओ इस मार्ग पर, तो आगे बढ़ते रहोगे, क्योंकि इस मार्ग में चार कदम भी बढ़ गये तो बहुत बड़ा रास्ता पार हो जायेगा, और इसके लिए आवश्यक है ध्यान।

ध्यान के महासागर में उतरें

ध्यान एक सम्पूर्ण प्रक्रिया है, और इसकी भी विधि है, और इस विधि में प्रवीणता केवल अभ्यास द्वारा ही संभव है, और अभ्यास हमेशा कठिन रहता है, लेकिन जब

अभ्यास करने से कार्य में "एक्सपर्ट" हो जाते हो तो आनन्द कुछ और ही आता है, जिसे तैरना नहीं आता वह जल में उतरते हुए डरता है, और यदि जबरदस्ती उतर भी जाता है तो थोड़ी देर के प्रयास करने के उपरांत उसे लगता है, कि शरीर थक गया, इसमें क्या आनन्द है ? लेकिन जैसे-जैसे वह प्रयास कर तैरना सीख लेता है, तो उसका आनन्द एक दम उदय हो जाता है, और फिर उससे कहो कि अब पानी से बाहर आ जाओ तो वह यही कहेगा, थोड़ी देर और तैर लेता हूं, थोड़ा आनन्द और लूट लूं, ठीक यही बात ध्यान में है, ध्यान के महासागर में उतरे नहीं और उसमें तैरना सीखा नहीं, कि हर लहर में आनन्द आता है, साधना का मार्ग सरल पड़ने लगता है, और सिद्धि प्राप्त हो जाती है ।

ध्यान का तात्पर्य है, खो जाना, और खो जाने के लिए पूर्ण रूप से एकाग्र होना पड़ता है, शरीर की सारी शक्तियों का प्रवाह एक ओर निश्चित होने लगता है, और इसके लिए शुरुआत करनी ही है, पहले-पहले मन भटकेगा ध्यान कर रहे हो कुछ, और दिखेगा कुछ और ही, ऑफिस दिखेगा, समस्याएं दिखेंगी, घर परिवार दिखेगा, चिन्ताएं, दिखेंगी, लेकिन धीरे-धीरे यह सब खाली होने लगेगा और भरने लगेगी शक्ति, और उस समय तुम गुरु का ध्यान करोगे तो गुरु तुम्हारे पास होंगे, यही तो है ध्यान की शक्ति ।

योगियों ने ध्यान के लिए कुछ विशेष योगासन बताये सीधे बैठने के लिए कहा-लिखा, पद्मासन आवश्यक बताया, लेकिन यह विधि तुम लोगों के लिए संभव नहीं, सीधे अकड़ कर पद्मासन में तीन दिन बैठोगे और टांगे, कमर, घुटने दर्द करने लगेंगे, ध्यान का आनन्द तो आये न आये, दर्द बार-बार जरूर आने लगेगा, और तुम छोड़ दोगे यह सब, लेकिन मैं तुम्हें अभ्यास कराना चाहता हूं ।

ध्यान के लिए बैठ जाओ एक जगह, अपने आप को शान्त करने का प्रयास करो, एकाग्र करने का प्रयास करो, जो मन में भाव आता है, उसे आने दो, यदि किसी बात से हंसी आती है, तो खुल कर हंसो, उसे दबाओ मत, यदि किसी चिन्ता से रुदन आता है तो आंसुओं को रोको मत, गुस्सा आता है तो गुस्से को जोर से बोल कर, हल्ला कर निकाल दो, यह भाव प्रक्रिया चलने दो, २१ दिन तक ऐसे ही चलता रहा तो २२ वें दिन ऊर्जा का विस्फोट हो जायेगा, एक शक्ति अपने आप उत्पन्न हो जायेगी, शक्ति तो विद्यमान है और तुमने ध्यान के द्वारा ऊपर से कचरा हटा दिया है, अब तुम अपने मालिक खुद हो और तुम्हारे पास एक पूंजी, जो कि शक्ति की पूंजी है, आ जायेगी ।

ध्यान, योग प्रक्रिया—ऐसे भी संभव है !

अपने कमरे का दरवाजा बन्द कर बैठ जांय सामने एक दर्पण रख दें और दर्पण के सामने एक घी का दीपक जलाएं, और इस दीपक की ज्योति दर्पण के मध्य भाग में प्रतिविम्बित हो, अपने कानों में रुई का डाट दे दें और अब शान्त भाव से बैठ कर उस ज्योति को दर्पण के मध्य में स्थिर करें, कोशिश करें कि पलक न झपके, शुरू-शुरू में आँखों से पानी आयेगा, आने दो, आंखें पोंछ कर प्रयास प्रारम्भ करें, पहले सप्ताह में १५ मिनट प्रयास करेंगे, फिर जब पानी आना बन्द हो जाय तो इस अभ्यास को बढ़ाते रहें, और इसे एक घंटे तक बढ़ाएं ।

हो सकता है, एक महीने के भीतर-भीतर तुम्हें कुछ विशेष दृश्य दिखाई पड़ेंगे, घटनाएं चलचित्र की भांति स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगती हैं, समस्याएं स्पष्ट होने लगती हैं, और उनका समाधान भी दिखने लगता है, ध्यान में गुरु को याद करोगे तो गुरु स्पष्ट रूप से दिखाई देंगे, उनसे तुम्हारी बातचीत होगी, इष्ट देवता दिखाई देंगे, और शक्ति तत्व केवल बीज रूप में नहीं रह कर प्रस्फुटित होने लगेगा ।

यही बिन्दु है साधना में आगे बढ़ने का, और अब साधना से सिद्धि मार्ग पर तुम अवश्य ही सफल हो जाओगे, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है । ●

वीर सिद्धि दिवस के

अवसर पर

अदृश्य शक्ति को अपने वश में करें

वीर साधना

से

वीर जयन्ती ज्येष्ठ शुक्ल १ गुरुवार अर्थात् १३-६-६१ को है, और यह दिवस तांत्रिक साधना, मांत्रिक साधना की दृष्टि से अत्यन्त विशेष प्रभावशाली दिवस है, जिस दिन साधना सम्पन्न कर अत्यन्त प्रबल अदृश्य शक्तियों अर्थात् भूत-प्रेत इत्यादि से इच्छित कार्य सम्पन्न कराया जा सकता है, उनको अपने अनुकूल कर उनकी शक्ति का पूरा-पूरा उपयोग लिया जा सकता है, तथा अशरीरी आत्माओं से सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है।

तांत्रिक साधना में वीर साधना का स्थान अत्यन्त उच्च माना गया है, क्योंकि इस साधना में सिद्धि प्राप्त करने पर साधक के पास एक अधिकार तत्व आ जाता है और अदृश्य वीर शक्तियां जाग्रत हो कर उसकी इच्छा के अनुसार कार्य करती हैं, उसे कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं रहती है, वह जो कार्य सम्पन्न कराना चाहता है उसकी इच्छा भर अपने मन में कर लेता है, तो "वीर" अपने आप उस कार्य को सम्पन्न कर देता है।

स्वामी नित्यानन्द पिछले कई वर्षों से साधना के मार्ग में भटक रहे थे, लम्बी-लम्बी यात्राएं की, मूल रूप से ये कर्नाटक के धारवाड़ जिले के थे, संस्कृत का ज्ञान ठीक था, हिन्दी भाषा का ज्ञान कम था, हिमालय की यात्रा में इन्होंने कई साधुओं से, योगियों से सम्पर्क किया, लेकिन हर समय इनके मन में यह चिन्ता बनी रहती थी कि कल का क्या होगा, भोजन की व्यवस्था कैसे होगी, गर्म कपड़ों की व्यवस्था कैसे होगी, यदि साधक योगी तत्व अथवा

कोई सिद्धि प्राप्त कर लेता है, तो उसकी इच्छाएं अपने आप पूर्ण हो जानी चाहिए, उसे फल की चिन्ता नहीं रहनी चाहिए।

स्वामी नित्यानन्द अकेले ही कुछ ऐसा कार्य करना चाहते थे, जिससे वह साधु जीवन में भी अपनी दिन-प्रतिदिन की चिन्ताओं से मुक्त हो सकें, आखिर भटकते-भटकते आज से कोई चार वर्ष पूर्व पूज्य गुरुदेव के पास आये और सबसे पहले तो उन्होंने अपना ज्ञान बघारा, फिर उन्होंने गुरुदेव से अपनी कुछ शंकाओं का समाधान प्राप्त किया, गुरुदेव ने कहा कि एक महीने आश्रम से बाहर रहो, एक महीने बाद यदि तुम में योग्यता दिखी तो तुम्हें साधना प्रयोग सिखाऊंगा, तब उन्होंने हाथ जोड़ कर कहा, कि मेरे पास न तो वापिस जाने के लिए किराये के पैसे हैं, और न ही रोज के खर्चों की पूर्ति के लिए कोई साधन है, मैं एक महीने तक कैसे काम चला सकता हूं? ट्रेन में बिना टिकट बैठ कर आ गया हूं, भगवे कपड़े होने के कारण टिकट चेकर ने भी टिकट को नहीं पूछा, अब आप ही बताइये मैं बाहर कहां रहूं और क्या खाऊं?

पूज्य गुरुदेव ने कहा कि तुम पढ़े लिखे हो, संन्यासी जीवन तुमने अपनी इच्छा से ग्रहण किया है, गृहस्थ जीवन में तो तुम कोई नौकरी करके पेट भर सकते थे, लेकिन अब तुम नौकरी भी नहीं कर सकते, और भीख भी नहीं मांग सकते, क्या तुम्हें इस बात का ज्ञान, इस बात की सिद्धि नहीं है, कि तुम्हारी आवश्यकताओं की पूर्ति अपने आप हो जानी चाहिए, तुम्हें रोज शाम को दूसरे दिन की चिन्ता नहीं होनी चाहिए, तभी तो तुम्हारे संन्यास की सार्थकता है, अन्यथा तो तुम जीवन से उसी प्रकार जुड़े हो, तुम्हारा चिन्तन कैसे ऊपर उठ सकता है? नित्यानन्द चरणों में गिर पड़े और बोले अब आप मुझे दीक्षा दे कर अपना शिष्य बनाएं और मुझे इन दिन-प्रतिदिन की चिन्ताओं से मुक्त करें, जिससे मैं अपने जीवन के इस थोड़े से बचे समय में कुछ नया सोच सकूं और संन्यास को सार्थक कर सकूं।

सत्य भी यही है यदि आपको जीवन भर चिन्ता ही लगी है, चाहे वह आजीविका की हो, अथवा कोई अन्य कार्य की, तो जीवन तो उन्हीं कार्यों में सिमट कर रह जायेगा, पूज्य गुरुदेव ने भी इस बात को सोचते विचारते हुए कहा कि नित्यानन्द, मैं तुम्हें 'रुद्र तंत्र' की महत्वपूर्ण 'वीर साधना' सिखाऊंगा जिससे तुम्हारा जीवन सही अर्थों में सार्थक हो सके, और तुम्हारा शिष्यत्व पूर्ण हो सके, क्योंकि यदि गुरु का एक भी शिष्य भूखा सोता है, या चिन्ता में सोता है, तो गुरुदेव को चैन से नींद नहीं आ सकती, क्योंकि उनका चिन्तन तो शिष्य की चिन्ता हटाने में ही रहता है।

रुद्रयामल तंत्र की वीर साधना

- तंत्र साहित्य के इस महान ग्रन्थ के अनुसार वीर साधना का मूल आधार रुद्र भाव है, शिव भाव है, जब यह भाव जाग्रत हो जाता है, तो ऐसी शक्ति आ जाती है, कि इच्छा के अनुरूप कार्य सम्पन्न होने लगता है।
- 'रुद्रयामल तंत्र' में लिखा है, कि शिव भाव वही प्राप्त कर सकता है जो चिन्ताओं से अपने आपको मुक्त कर सके, और इसके लिए सबसे उत्तम उपाय वीर साधना ही है।
- वीर साधना, साधक को ऊपर उठा कर जीवन में ऐसे स्थान पर ले आती हैं, जहां उसका कुण्डलिनी चक्र खुल सकता है, और वह जीवन में अन्य साधनाएं भी सम्पन्न करे, तो उसे अनुकूलता प्राप्त होती है।
- अदृश्य, अशरीरी आत्माएं वायुमण्डल में विचरण करती ही रहती हैं, और वीर सिद्धि प्राप्त साधक उन्हें अपने वश में कर सकता है।
- यह साधना प्रबल साधना है, और इस हेतु गुरु आज्ञा ले कर, साधना के संबंध में गुरु आशीर्वाद

प्राप्त कर ही सम्पन्न करनी चाहिए।

- केवल आजमाने के उद्देश्य से अथवा मजाक के तौर पर इस प्रकार की प्रबल साधना सम्पन्न न करें।

साधना विधान

वीर सिद्धि दिवस इस वर्ष १३-६-९१ गुरुवार को है, लेकिन इसके अलावा साधक किसी भी रविवार को तीन रविवार तक निरन्तर प्रयोग कर साधना सम्पन्न कर सकता है, इस साधना हेतु तीन सामग्री विशेष आवश्यक हैं—**'वीर सिद्धि यन्त्र' 'वीर सिद्धि माला' 'भगवान शिव का चित्र'**।

साधना प्रयोग

साधक रात्रि को दस बजे के बाद जल से स्नान कर ले और स्नान करने के बाद पहले से ही धो कर सुखाई हुई काली धोती को पहिन कर काले आसन पर दक्षिण की ओर मुंह कर घर के किसी कोने में या एकान्त स्थान में बैठ जाएं।

फिर सामने एक लोहे के पात्र या स्टील की थाली में करवीर यंत्र को स्थापित कर दें, जो कि पहले से ही मंत्र सिद्ध प्राणश्चेतना युक्त हो, इसके पीछे भगवान शिव का चित्र फ्रेम में मढ़वा कर स्थापित कर दें, फिर साधक हाथ जोड़ कर करवीर का ध्यान करें—

ध्यान मंत्र

धूम्र-वर्णं महा-कालं जटा भारान्वितं यजेत्
त्रि-नेत्र शिव रूपं च शक्ति युक्तं निरामयं
दिगम्बरं घोर-रूपं नीलांछन च यप्रभम्
निर्गुण च गुणाधारं काली-स्थानं पुनः पुनः ।।

ध्यान के उपरान्त साधक वीर माला से निम्न मंत्र की १०१ माला मंत्र जप सम्पन्न करें, यह मंत्र छोटा होते हुए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और **"मुण्ड माला तंत्र"** में इस मंत्र की अत्यन्त प्रशंसा की गई है।

वीर सिद्धि मंत्र

।। ॐ कर वीर यक्ष यक्ष क्षं क्षीं क्षूं क्षैं क्षः स्वाहा ।।

जब मंत्र जप पूर्ण होता है, उससे पहले ही, या मंत्र जप सम्पन्न होते-होते अत्यन्त सौम्य स्वरूप में वीर स्वयं हाथ जोड़ कर कमरे में प्रकट होता है, तब पहले से ही ला कर रखे गये बेसन के चार लड्डुओं का भोग सिद्ध वीर को लगा दें, और अपने हाथ में जो वीर माला है, वह उसके गले में पहना दें, ऐसा करने पर सिद्ध वीर वचन दे देता है, कि जब भी तुम ११ बार उच्चारण करोगे, तब मैं अदृश्य रूप में उपस्थित होऊंगा और आप जो भी आज्ञा देंगे उसे पूरा करूंगा, ऐसा कह कर सिद्ध वीर, वीर माला को वहीं छोड़कर अदृश्य हो जाता है।

दूसरे दिन साधक प्रातःकाल उठ कर स्नान आदि से निवृत्त हो कर वीर यंत्र, वीर माला और वह भोग किसी मन्दिर में रख दें, अथवा नदी तालाब या कुएं में डाल दें, भगवान शिव के चित्र को पूजा स्थान में स्थापित कर दें।

इस प्रकार करने पर वीर साधना सिद्ध हो जाती है, और उसके बाद साधक जब भी मात्र ग्यारह बार उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करता है, तो अदृश्य रूप में सिद्ध वीर उसकी आंखों के सामने प्रकट होता है, और उस समय साधक उसे जो भी आज्ञा देता है, वीर तत्क्षण उस आज्ञा का पालन कर साधक का कार्य सम्पन्न कर देता है।

वास्तव में ही यह अत्यन्त गोपनीय प्रयोग है, अतः यह प्रयोग सामान्य व्यक्ति को, निन्दा करने वाले या तर्क करने वाले दुराचारी को नहीं देना चाहिए, और न इसकी विधि समझानी चाहिए।

हनुमान साधना का एक विशिष्ट प्रयोग

हनुमान शक्तिशाली, पराक्रमी, संकटों का नाश करने वाले और दुःखों को दूर करने वाले महावीर हैं, इनके नाम का स्मरण ही अपने आप में साहस और शक्ति प्रदान करने वाला है, हिमालय की तलहटी में स्थित सिद्ध **"योगीराज बालास्वामी"** से जो "हनुमान प्रत्यक्ष साधना सिद्धि प्रयोग" प्राप्त हुआ, उसे मैं स्पष्ट कर रहा हूं।

मंगलवार के दिन साधक पवित्र हो कर लाल धोती पहिन कर और शरीर पर लाल धोती ओढ़ कर लाल रंग के आसन पर बैठें, और अपना मुंह दक्षिण की ओर करें।

फिर सामने **रक्त चन्दन से निर्मित हनुमानजी की मूर्ति** को किसी पात्र में स्थापित करें, और उसकी प्राणप्रतिष्ठा करें, इसके बाद इस मूर्ति की पूजा करें, और मूर्ति पर सिन्दूर का तिलक लगावें, और सारे शरीर पर भी सिन्दूर मल दें, फिर गुड़, घी और आटे से बनी हुई रोटी को मिला कर लड्डू बना कर उसका भोग लगावें।

साधक को चाहिए कि इसके बाद नीचे लिखे मन्त्र का मात्र १५०० बार उच्चारण कर वहीं भूमि पर पूजा स्थान में ही सो जाय, यह साधना रात्रिकालीन साधना है, अतः रात को ही इस मन्त्र का जप करें।

मंत्र

॥ ॐ नमो हनुमन्ताय आवेशय आवेशय स्वाहा ॥

इस प्रकार नित्य करें, जो नेवैद्य हनुमान जी के सामने रखा है, वह आठों पहर रखा रहे, और दूसरी रात्रि को वह नेवैद्य किसी दूसरे पात्र में रख दें, और नया नेवैद्य हनुमान जी को चढ़ा दें, इस प्रकार मात्र ११ दिन करें।

यह निश्चित है, कि ११ वें दिन हनुमान जी साधक को प्रत्यक्ष दर्शन देंगे, और उसके प्रश्नों का उत्तर देंगे, अथवा जिस निमित्त यह प्रयोग किया गया है, वह कार्य निश्चय ही सम्पन्न होगा।

जब प्रयोग पूरा हो जाय तो वह एकत्र किया हुआ नेवैद्य या तो किसी गरीब व्यक्ति को दे दें, अथवा दक्षिण दिशा में घर के बाहर भूमि खोद कर उसे गाड़ दें।

इस प्रयोग से मैंने बड़ी विपत्तियों को अपने ऊपर से टाला है, भयंकर रोगों से छुटकारा मिला है, और सजा पाये हुए लोगों को उससे मुक्त कराया है, वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आप में अचूक और अद्वितीय है।

तीर की तरह
अचूक फल प्रदान करने वाले
शीघ्र सिद्धिदायक
ये
यन्त्र

जो निश्चय ही शीघ्र सफलता देने वाले हैं

मोती चुनने के लिए सागर में गहरे उतरना पड़ता है, उसी प्रकार ज्ञान के श्रेष्ठ मोती प्राप्त करने हेतु मंत्र यंत्र तथा तंत्र के विशाल सागर में यदि गुरु कृपा हो जाय, तो श्रेष्ठ स्वरूप प्राप्त कर सिद्धि प्राप्त कर सकते हैं।

भगवान शिव के अमृत वचनों पर आधारित तथा महर्षि शुक्राचार्य द्वारा संहिता बद्ध, षडंग मंत्र विद्या पर आधारित महाग्रन्थ "यन्त्र चूड़ामणि" श्रेष्ठतम ग्रन्थ कहा जा सकता है।

ये शब्द, ये प्रयोग केवल शब्द मात्र नहीं हैं, ये यंत्र तो हर घर में होने चाहिए, हर एक को ये साधनाएं सम्पन्न करनी आवश्यक हैं, ये सिद्ध प्रयोग हैं, जिन्हें प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सकता है।

कथा आती है, कि एक बार भगवान शिव, पार्वती के साथ विराजमान थे, पार्वती ने शिव से निवेदन किया, कि पृथ्वी पर इतने अधिक कष्ट क्यों हैं? मनुष्यों के चेहरों पर हर समय चिन्ता की रेखाएं क्यों बनी रहती हैं? वे लोग जो भी कार्य करना चाहते हैं, वह सिद्ध नहीं होता, उनकी इच्छाएं हर समय अपूर्ण क्यों रहती हैं?

रुद्र देव ने कहा, कि पृथ्वी पर मनुष्य कार्य तो करता है, कर्मशील भी है, परन्तु उसमें कार्य को सही तरीके से करने का ज्ञान नहीं है, इसके लिए वह बार-बार भटक जाता है, शास्त्रों के अनुसार चलता नहीं, उसमें आचार-विचार की नियमितता नहीं है, हर समय अविश्वास, संदेह से घिरा रहता है, गुरु पर, साधना पर, मंत्रों पर, अविश्वास करते हुए कार्य करता है, इसलिए उसे जीवन में सिद्धि नहीं मिल पाती, पार्वती ने कहा, कि हे देव, क्या ऐसा कुछ उपाय हो सकता है, जिसे मनुष्य सरल रूप में कर सके, अपनी दिन-प्रतिदिन की चिन्ताओं को मिटा कर अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर परमतत्व को प्राप्त हो सके, मनुष्य की चिन्ताएं उसे एक चक्र में उलझाये हुए हैं, इसका कुछ उपाय अवश्य बतायें।

इस पर सिद्धियों के प्रदाता शिव ने जो १०८ प्रयोग विशेष रूप से दिये, वे साधना का, सिद्धि का, आधार हैं, सरलतम विधि के साथ, सरल मंत्र जप के ये प्रयोग साधक स्वयं सम्पन्न कर सकेंगे, इस में सर्वप्रथम छः यंत्र विवेचन एवं ज्ञान स्पष्ट किया जा रहा है, शेष आगे के अंकों में क्रमशः प्रकाशित किये जायेंगे।

यंत्र साधना के कुछ विशेष नियम हैं, जिनकी अनुपालना साधक को अवश्य ही करनी चाहिए, बिना जानकारी, बिना नियम, कार्य करने से सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती।

- प्रत्येक प्रयोग को तीन दिन तक विधि-विधान से सम्पन्न करें, पूजन कार्य करें।
- तीन दिन तक ब्रह्मचर्य धर्म का पूर्ण रूप से पालन करें, ध्यान में भी शुद्धता हो।
- शुद्ध, शान्त, अन्तःकरण से ही प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए, साधना-समय को कल्प कहा जाता है, पूरे कल्प में पूर्ण विश्वास के साथ कार्य करना चाहिए, अन्यथा संदेह पूर्वक किया गया कार्य विपरीत ही फल देता है।
- प्रथम दिन स्नान कर, शुद्ध वस्त्र धारण कर गुरु पूजन सम्पन्न करें, और कुल देवता, इष्ट देवता, का भी पूजन सम्पन्न करें।
- यंत्र साधना का कार्य एकान्त में सम्पन्न करना चाहिए, साधना समय में विघ्न नहीं पड़ना चाहिए।
- सात्विक भोजन ग्रहण करना चाहिए और केवल दूध, फलाहार से नहीं चलता हो, तो केवल सांयकाल को ही भोजन करें।
- तीन दिन भूमि पर ही शयन करें, रात्रि में जो भी स्वप्न आये, प्रातःकाल उठ कर उनका विवेचन अवश्य करें, अशुभ स्वप्न आने पर उसी समय उठ कर गुरु मंत्र जप सम्पन्न करना चाहिए।

इन नियमों को ध्यान में रखते हुए नीचे दिये गये विशेष प्रयोगों को साधक सम्पन्न कर सकते हैं, एक समय में एक ही प्रयोग सम्पन्न करें, सुबह कोई प्रयोग, दोपहर को कोई प्रयोग और शाम को कोई प्रयोग उचित नहीं है, एक-एक करके साधना सम्पन्न की जाय।

१-ऋण मोचन यन्त्र

जब ऋण बाधा बहुत अधिक बढ़ जाय तो बुधवार को प्रातः सुबह जल्दी उठ कर निम्न यन्त्र को अपने सामने

ऋण मोचन यन्त्र
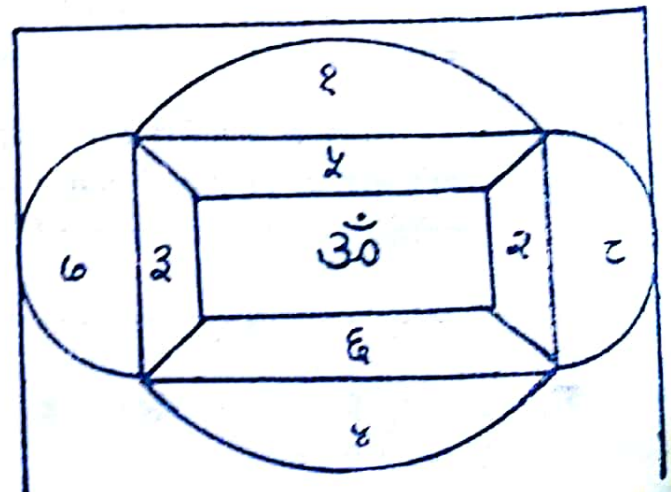
एक पात्र में स्थापित करें, फिर इस यन्त्र को पुनः एक बार अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखें, चारों ओर "श्रीं" बीज मन्त्र लिखें, मध्य में जहां 'ॐ' लिखा है, उसके नीचे अपना नाम लिखें, सामने सात सुपारी रखें, और प्रत्येक सुपारी के नीचे एक सिक्का स्थापित करें तथा कुंकुम चढ़ाएं, अब इष्ट देवता, कुल देवता तथा गुरु पूजन कर मन्त्र जप प्रारम्भ करें—

मन्त्र

"श्रीं"

इस मन्त्र की ग्यारह माला जप करें, तीन दिन के पश्चात् मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **"धातु के ताबीज"** में बन्द कर अपनी दाहिनी भुजा में काले धागे से धारण कर लें, तीन दिन के पश्चात् सातों सुपारी शिव मन्दिर में चढ़ा दें।

२-व्यवसाय लाभ यन्त्र

सोमवार के दिन प्रातः सूर्योदय के पश्चात् चित्र में दिये गये यन्त्र का पूजन अष्टगन्ध से सम्पन्न करें, यन्त्र में अपनी दुकान अथवा व्यापार का नाम लिखें, यदि स्वयं के नाम से व्यापार कार्य हो, तो अपना स्वयं का नाम लिखें, पुष्प अर्पित करें और निम्न मन्त्र की सात माला प्रतिदिन जप करें—

मन्त्र

।। ऐं श्रीं ॐ ह्रीं क्लीं ।।

व्यवसाय में लाभ हेतु

१	९	१०
१४	७ ऐं २ श्री ॐ ह्रीं ३ क्लीं ८	६
५	११	४

तीन दिन के पश्चात् इस यन्त्र को ताबीज में डाल कर गले में धारण कर लें।

३-शत्रु विद्वेषण यन्त्र

शनिवार की रात्रि को किये जाने वाले इस प्रयोग में दिये गये यन्त्र में जहां नाम लिखा है, वहां शत्रु का नाम लिखें, तथा भात चढ़ाएं और **"काली हकीक माला"** से सात माला मन्त्र जप करें—

मन्त्र

।। ह्रीं श्रं ह्रीं ।।

तीन दिन के प्रयोग के पश्चात् इस यन्त्र को ताबीज में डाल कर उस पर काला धागा बांध कर जमीन में गाड़

शत्रु विद्वेषण यन्त्र

दें, इस यन्त्र का पूजन और प्रयोग घर में नहीं करें, शिव मन्दिर में अथवा श्मशान में ही प्रयोग करना चाहिए।
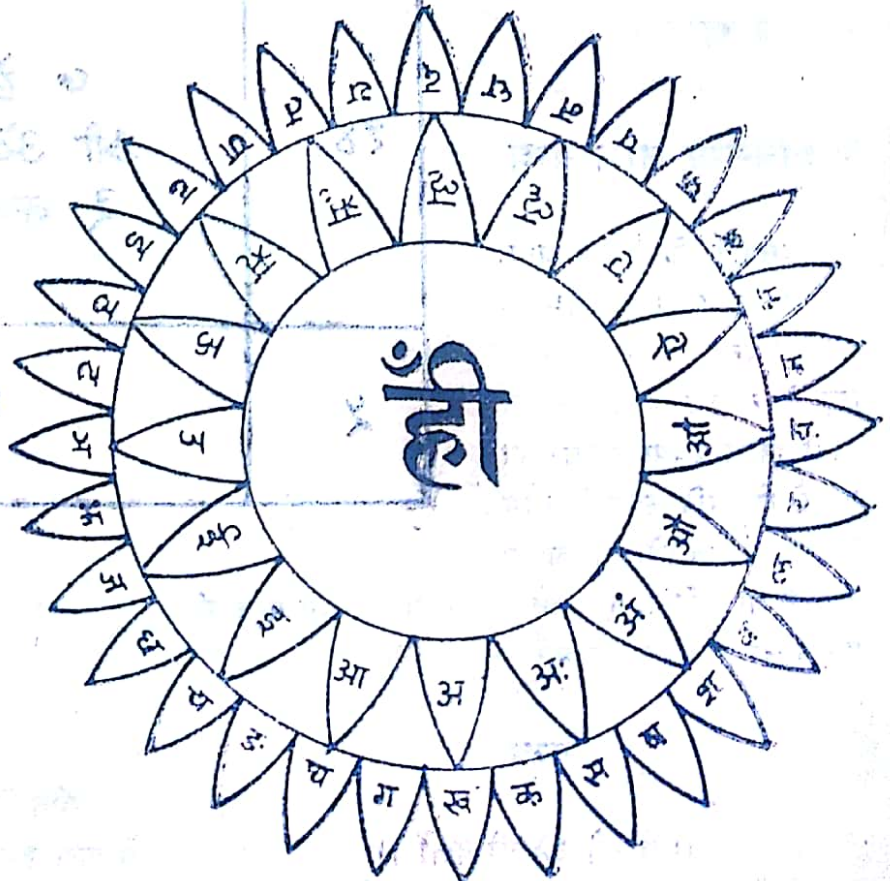
४-अनंग यंत्र

गृहस्थ सुख, जीवन का सौन्दर्य है, इसकी कमी जीवन में एक अधूरापन देती है, जो व्यक्ति पुरुषार्थ कमी की विशेष पीड़ाओं से ग्रस्त हों, उन्हें यह प्रयोग अवश्य ही संपन्न करना चाहिए, इस यंत्र के प्रभाव स्वरूप स्त्री, साधक के पूर्ण अनुकूल, उसके वश में, और उसे पूर्ण सुख प्रदान करने में समर्थ रहती है।

शुक्रवार की मध्य रात्रि को इस यंत्र को स्थापित करें, और इसे गन्ध, पुष्प, नैवेद्य इत्यादि अर्पित करें, साधक श्वेत वस्त्र धारण कर "ह्रीं" बीज मन्त्र का जप करते हुए अपनी शक्तिवर्धन का स्मरण करें, यदि संभव हो तो अष्ट गन्ध से भोज पत्र पर, चमेली की कलम से यह यंत्र निर्माण कर इसे भी अपने सामने स्थापित करें, फिर सात दिन तक प्रतिदिन पूजा करते हुए निम्न बीज मन्त्र की एक माला जप करें—

मन्त्र

।। ॐ ऐं मदने मदन विद्रावणे अनंग संग
मे देहि देहि क्रीं क्रीं स्वाहा ।।

सात दिन के पश्चात् साधक इसे पहले से प्राप्त त्रिलोह के तावीज में बन्द कर अपनी भुजा में धारण करें, यह प्रयोग निश्चय ही प्रबल प्रयोग है, जिसका प्रत्यक्ष परिणाम प्राप्त होता है।

अनंग यन्त्र

५-लक्ष्मी विनायक यन्त्र

जिस पर लक्ष्मी तथा गणेश दोनों की ही कृपा हो जाय, उसके तो असंभव कार्य पूरे हो जाते हैं, उसे जीवन में आगे बढ़ने से कौन रोक सकता है ? बुधवार को प्रातः स्नान कर, शुद्ध वस्त्र धारण कर, अपने पूजा स्थान में एक घी का दीपक जलाएं, सामने पीला वस्त्र बिछा कर यह यन्त्र रखें, अब एक सुपारी पर मौली लपेट कर चावल की ढेरी पर स्थापित करें, तथा कुंकुंम, केसर, अबीर-गुलाल, अष्टगन्ध, पुष्प, नेवैद्य से पहले गणपति का फिर लक्ष्मी का पूजन करें।

लक्ष्मी विनायक यंत्रम्
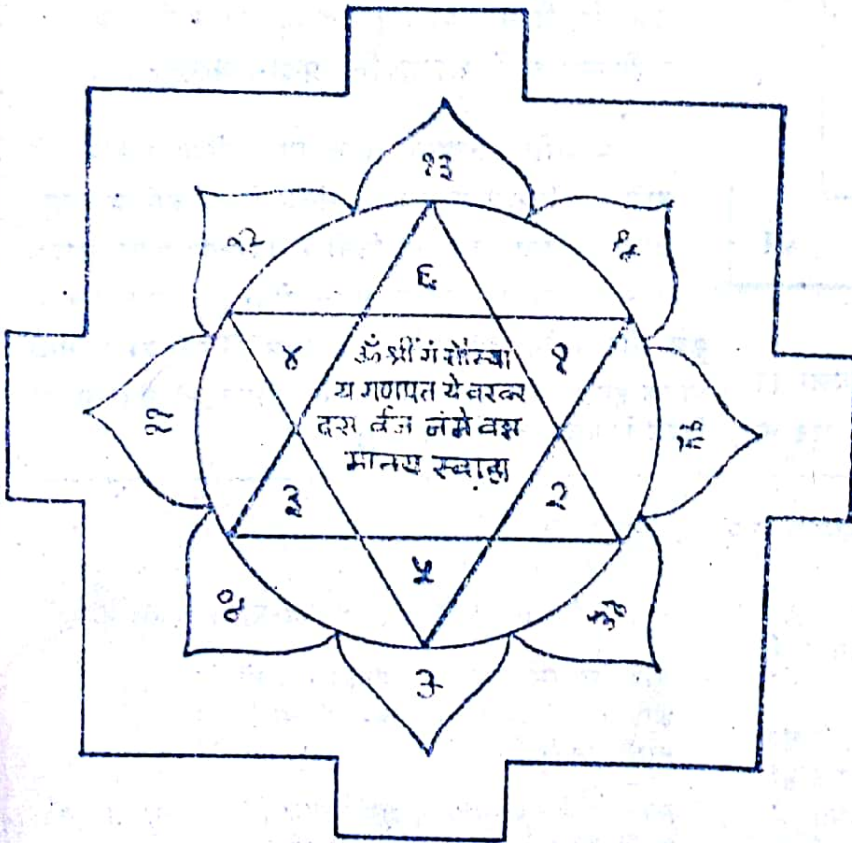
इस पूजन के पश्चात् तीन माला, यन्त्र के मध्य में लिखे गये मन्त्र का, जप करें—

मन्त्र

।। ॐ श्रीं ग्लौं नमः ।।

मन्त्र जप पूरा होने के पश्चात् इस यन्त्र को ताबीज में डाल दें, और यन्त्र के साथ ही चावल के सात दाने भी डाल दें, फिर इसे अपनी दाहिनी भुजा में धारण कर लें, इसके पश्चात् गणेश आरती तथा लक्ष्मी आरती सम्पन्न करें।

विशेष ध्यान रखें, कि मृतक कार्यों में जाते समय इसे धारण न करें तथा उतार कर अपने पूजा स्थान में रख दें, नित्य पूजन के क्रम में यन्त्र को अपने सामने रख कर एक माला मन्त्र जप अवश्य करें।

६-महामृत्युञ्जय कवच यन्त्र

व्याधि, पीड़ा जीवन का अभिशाप है, बीमारी व्यक्ति के जीवन को घुन की तरह खोखला कर देती है, शरीर तो निर्बल होता ही है, मन और इच्छा शक्ति निर्बल हो जाते हैं और एक अज्ञात मृत्यु भय हर समय बना रहता है, इसीलिए महामृत्युंजय अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है, इसके पूजन में, जप में, वह शक्ति है, जो पीड़ा से प्रसन्नता की ओर, बीमारी से स्वस्थता की ओर, भय से निर्भयता की ओर ले जाती है।

किसी भी सोमवार को किये जाने वाले इस प्रयोग में प्रातः पहले स्नान कर शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर शिव पूजन सम्पन्न करें, तत्पश्चात् इस यन्त्र को अपने सामने रख कर एक ओर धूप, अगरबत्ती जलाएं, दूसरी ओर घर में रखें किसी भी **'शिवलिंग'** को यन्त्र पर रख कर चन्दन से पूजा करें, इसके सामने एक जल से भरा पात्र रखें, पूरे पूजन के दौरान **"ॐ नमः शिवाय"** मन्त्र का जप करते रहें, तथा इस

यन्त्र के चारों कोनों तथा मध्य में भी चन्दन लगाएं, इसके पहले पूजा के प्रारम्भ में ही अपना नाम, पिता का नाम तथा गोत्र (जाति) लिखें।

श्रीमहामृत्युञ्जय कवच यन्त्र

इसके पश्चात् महामृत्युंजय मन्त्र की ग्यारह माला का जप करें, अब सामने रखे जल को दाहिने हाथ से खुद के शरीर पर छिड़कें, और शेष जल पी लें।

मन्त्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥
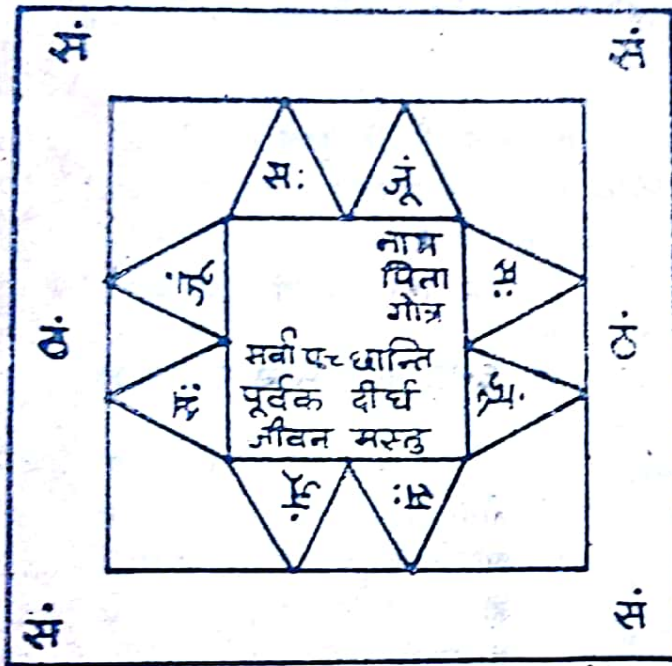
यदि किसी अन्य व्यक्ति के नाम से प्रयोग सम्पन्न करना है, तो पहले दाहिने हाथ में जल ले कर यह संकल्प करें, कि मैं गुरु तथा शिव को साक्षी रखते हुए यह पूजन कार्य अमुक (व्यक्ति का नाम, उसके पिता का नाम, गोत्र) हेतु सम्पन्न कर रहा हूं, पूजन के पश्चात् इस यन्त्र को तावीज में बन्द कर सोमवार को ही धारण करा दें, शिव कृपा का यह अनूठा प्रयोग बड़ी से बड़ी व्याधि में भी शान्ति प्रदान करता है।

ये प्रयोग अत्यन्त सरल एवं शीघ्र प्रभाव देने वाले हैं, जिससे समस्या के संबंध में तात्कालिक राहत प्राप्त हो जाय, दिये गये दिनों में निरन्तर पूजन सम्पन्न करने से पूर्ण अनुकूलता प्राप्त होती है, अगले अंक में कुछ और प्रयोग दिये जायेंगे, निश्चय ही पत्रिका के सुधी पाठक इनसे लाभ प्राप्त कर अपने जीवन को संवारने की दिशा में कदम बढ़ायेंगे। ●

(पृष्ठ संख्या ३२ का शेष भाग)

- यदि पंचम भाव में उच्च राशिस्थ सूर्य के साथ बुध स्थित हो तो जातक को जीवन में धन की कमी कभी नहीं रहती।
- जातक की कुण्डली वृषभ लग्न की हो, और सूर्य निर्बल हो कर राहु एवं शनि से दृष्ट, अथवा युक्त हो, तो उस व्यक्ति का कई बार स्थानान्तरण होता है, तथा राजकीय सेवा में कई उत्थान पतन देखने पड़ते हैं।
- यदि मेष लग्न में सूर्य और चन्द्रमा एक साथ बैठे हों, तो राज्य योग बनता है, एवं व्यक्ति सफल नेता बनता है।
- कर्क लग्न हो, सूर्य दशम भाव में मंगल के साथ स्थित हो, तो उस व्यक्ति का राज्य पक्ष अत्यन्त प्रबल बनता है, वह व्यक्ति जीवन में उच्च पद प्राप्त करता है।
- यदि सप्तम भाव में स्वगृही सूर्य हो, तो उस व्यक्ति की पत्नी प्रबल, दृढ़ विचारों वाली तथा पुरुष पर हावी रहती है।
- लग्न से दशम भाव में सूर्य स्थित हो, तो जातक को अपने पिता से बहुत अधिक धन प्राप्त होता है।

केवल सूर्य के योगों के संबंध में लिखा जाय तो पूरा ग्रन्थ बन सकता है, पाठकों को ज्योतिष ज्ञान के संबंध में यह प्रथम अध्याय है, पत्रिका सदस्य निश्चय ही अपने जन्मकुण्डली के संबंध में कुछ पूछ सकते हैं, किसी भी शंका का समाधान प्राप्त कर सकते हैं। ●

ग्रह आपको किस प्रकार प्रभावित करते हैं

ग्रहों का योग और आपका जीवन

सूर्य आपकी जन्मकुण्डली में

सूर्य सबसे अधिक प्रभावशाली ग्रह है, जो जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित करता है, पिछले अंक से पाठकों को यह ज्ञात हो गया होगा, कि पत्रिका कार्यालय में ज्योतिष संबंधी सभी कार्य, जन्मपत्रिका निर्माण, तथा फलित कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है, पाठकों को भी ज्योतिष का ज्ञान होना निश्चय ही आवश्यक है, आप अपनी जन्मपत्री स्वयं देख सकते हैं, सबसे पहले आइये देखते हैं आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य की स्थिति और उसका प्रभाव।

- सूर्य, मेष राशि का उच्च तथा तुला राशि का नीच का माना जाता है।
- सूर्य, सिंह राशि का स्वामी है तथा यह पुरुष ग्रह, पूर्व दिशा का स्वामी, अग्नि तत्व वाला, क्षत्रिय वर्ण तथा ताम्र वर्ण ग्रह है।
- चन्द्र, मंगल और गुरु सूर्य के मित्र, बुध सम-भाव तथा शुक्र, शनि शत्रु ग्रह माने गये हैं।
- सूर्य-व्यक्तित्व, पराक्रम, पिता, तेज, क्रोध, हिंसक कार्य, राज्य कार्य, राजकीय शक्ति का कारक ग्रह है।

प्रत्येक भाव में सूर्य का अलग-अलग प्रभाव होता है, यदि सूर्य प्रथम भाव अर्थात् लग्न में स्थित है, तो जातक कठोर विचारधारा का, प्रबल, कलह में विजय प्राप्त करने वाला अवश्य होता है, लेकिन स्त्री तथा सहयोगियों से मतभेद रहता है, और अपने ही स्थान पर व्यापार में उसे सफलता मिलती है।

- लग्न में यदि मेष राशि हो, और सूर्य हो, तो व्यक्ति शारीरिक दृष्टि से, विद्या की दृष्टि से, आय की दृष्टि से श्रेष्ठ रहता है, पर उसे नेत्र बाधा हो जाती है।
- प्रथम भाव में तुला का सूर्य व्यक्ति को उच्च अधिकारी अवश्य बनाता है, पर शारीरिक कष्ट कुछ न कुछ बना ही रहता है।
- दूसरे भाव में सिंह का सूर्य लाभदायक है, लेकिन तुला का सूर्य द्वितीय भाव में आर्थिक दृष्टि से हानि पहुंचाता है, इस भाव में अन्य राशियों का सूर्य भी श्रेष्ठ नहीं है।
- तृतीय भाव में सूर्य व्यक्ति को पराक्रमी, बलशाली, तथा

दृढ़ निश्चय वाला बनाता है, इसमें कुम्भ राशि होने पर व्यक्ति अत्यन्त भाग्यशाली बनाता है ।

– चतुर्थ भाव में सूर्य बाधाकारक है, हर सुख में विघ्न पड़ता है, और चतुर्थभाव में तुला का सूर्य होने पर बार-बार स्थानान्तरण होता है, व्यापारी को कई बार व्यापार बदलना पड़ता है, चतुर्थ भाव में सिंह का सूर्य स्थित होने पर व्यक्ति विशेष जमीन-जायदाद, सम्पत्ति का अधिकारी होता है, और उसे दीर्घ समय तक मातृ सुख प्राप्त होता है ।

– पंचम भाव में सूर्य स्थित होने पर जातक तीव्र बुद्धि वाला, अपना कार्य निकालने वाला, तथा उन्नतिशील होता है, लेकिन उसे पेट संबंधी पीड़ा तथा सन्तान संबंधी पीड़ा रहती ही है ।

– षष्टम भाव में सूर्य स्थित होने पर प्रबल से प्रबल शत्रु पर व्यक्ति विजय प्राप्त करता है, उसमें संघर्ष करने की विशेष क्षमता होती है ।

– सप्तम भाव में सूर्य व्यक्ति को स्त्री से चिन्ता दिलाते हैं, शारीरिक कष्ट कुछ न कुछ बना रहता है, दुष्ट लोगों द्वारा हानि पहुंचने की चिन्ता रहती है ।

– अष्टम भाव में सूर्य आर्थिक दृष्टि से कमी तथा इच्छा शक्ति, आत्मबल की हानि करता है, और नेत्र संबंधी पीड़ा, विकार रहता है ।

– नवम भाव में यदि सूर्य स्थित है, तो वह अत्यन्त श्रेष्ठ माना गया है, इसमें भी नवम भाव में मेष राशि का सूर्य व्यक्ति को व्यापार में विशेष उन्नति प्रदान करता है ।

– दशम भाव में सूर्य जातक को सरकारी लाभ की स्थिति प्रदान करता है, या तो वह सरकारी नौकरी में विशेष सफलता प्राप्त करता है, अथवा ठेकेदारी, सप्लाई, राजनैतिक कार्य में श्रेष्ठता प्राप्त करता है, इसमें भी यदि मेष का सूर्य है, तो जातक राजनीति में विशेष सफलता प्राप्त करता है, दशम भाव में तुला का सूर्य राज्य सरकार से शत्रुता तथा पिता से विरोध की स्थिति बनाते हैं ।

– एकादश भाव में सूर्य राज्य कृपा का योग बनाता है, जातक धन का पूर्ण सुख प्राप्त करता है, परन्तु संतान का सुख पूर्ण रूप से नहीं मिल पाता ।

– द्वादश भाव में सूर्य व्यय को बढ़ाता है, आय से व्यय अधिक होता हैं, और बांयें नेत्र में कष्ट विशेष रूप से रहता है ।

अब सूर्य के कुछ विशेष योग जो जातक की जन्मकुण्डली में स्थित हों, तो उनका प्रभाव अलग-अलग पड़ता है, कुछ विशेष योग—

– यदि जन्मकुण्डली में सूर्य मीन राशि में स्थित हो तथा चन्द्रमा प्रथम भाव में स्वगृही हो, तो **राज राजेश्वर योग** बनता है, ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में आर्थिक दृष्टि से पूर्ण सुखी विशेष ऐश्वर्यशाली होता है ।

– यदि सूर्य से द्वितीय भाव में बुध हो और बुध से एकादश भाव में चन्द्रमा, तथा चन्द्रमा से पांचवे अथवा नवम भाव में गुरु हो, तो **भास्कर योग** बनता है, इस योग का व्यक्ति विशेष पढ़ा लिखा, ज्ञानी, कला-प्रेमी, बुद्धिमान, आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न तथा सबका प्रिय होता हैं ।

– यदि जन्मकुण्डली के किसी भी भाव में बुध, सूर्य साथ स्थित हों तो **बुधादित्य योग** बनता है, और ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान, चतुर, विशेष प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला तथा जीवन के सभी ऐश्वर्यों को प्राप्त करता है ।

– चन्द्रमा के अतिरिक्त यदि कोई ग्रह सूर्य से द्वितीय भाव में स्थित है, तो **वेशि योग** बनता है, सूर्य से यदि द्वितीय भाव में शुभ ग्रह है, तो व्यक्ति नेतृत्व करने वाला अच्छा वक्ता बनता है, शत्रुओं पर हावी रहता है, सूर्य से द्वितीय भाव में कुछ अशुभ ग्रह होने पर व्यक्ति दुष्ट व्यक्तियों की संगति करता है, मस्तिष्क में कुछ न कुछ कुचक्र घूमते ही रहते हैं ।

(शेष भाग पृष्ठ ३० पर देखें)

यह तो निश्चय ही चमत्कार है

आपके जीवन में आजीविका क्या होनी चाहिए
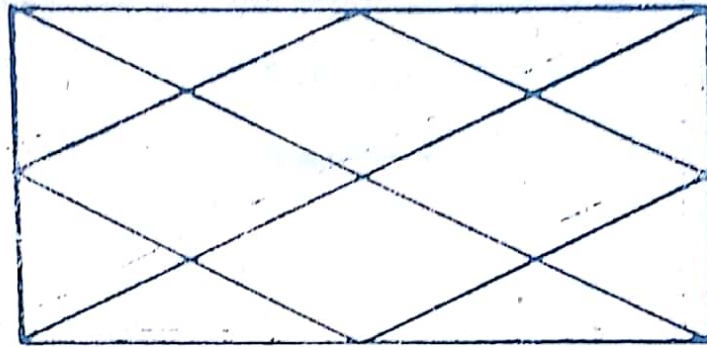
- क्या आपका भाग्योदय व्यापार से होगा ?
- क्या आप नौकरी से उन्नति के शिखर पर पहुंचेंगे ?
- क्या आपके लिए नौकरी के साथ साइड बिजनेस का योग है ?
- आप व्यापार किस नाम से करें ?
- आप व्यापार किस वस्तु का करें ?
- आपकी किस समय विशेष में उन्नति होगी ?
- आपकी किस समय हानि होने का योग है ?
- क्या आपको पार्टनरशिप करनी चाहिए ?
- किस व्यक्ति के साथ आपकी पार्टनरशिप चलेगी ?

क्या इन सब का सही उत्तर प्राप्त हो जाय, तो उन्नति पूर्ण रूप से प्राप्त हो सकती है? भाग्योदय हो सकता है ?

हां, यह सम्भव है !

"निखिल कम्प्यूटर"

आपके पत्रिका कार्यालय में स्थापित "निखिल कम्प्यूटर" द्वारा जिसमें व्यक्ति के आजीविका से सम्बन्धित १२,५०००० (बारह लाख पचास हजार) गणनाएं समाहित की गई हैं, यह 'जीवन भाग्योदय प्रोग्राम' जिसमें शुद्धतम रूप से स्पष्ट हो जाता है, आजीविका, भाग्योदय के सम्बन्ध में प्रत्येक प्रश्न और यह फलादेश बन जाता है आपके लिए एक विशेष 'जीवन गाइड', जिससे हर अगला कदम उठाने से पहले आपको ज्ञान होगा, कि क्या स्थिति बनेगी, और किस समय कार्य को किस प्रकार से सम्पन्न करना है, और ये गणनाएं हर व्यक्ति की शुद्ध जन्मकुण्डली, ग्रह दशा के आधार पर स्पष्ट कर देता है, प्रत्येक वह बिन्दु जो आजीविका से सम्बन्धित है।

सही मार्ग चुनिये न !

यदि किसी व्यक्ति को रेगिस्तान में अकेला छोड़ दिया जाय, जहां केवल धूल ही धूल है, रेत का विस्तार है, और उसे कहा जाय, कि अपना मार्ग अपने आप ढूंढ लो, तो वह व्यक्ति क्या करेगा ? उसके पास न तो कोई दिशा संकेत है, और न ही रेगिस्तान में कोई रास्ता-सड़क बनी है, वह एक ओर थोड़ी दूर चलेगा, फिर सोचेगा शायद यह रास्ता ठीक नहीं है, इधर तो रेत बढ़ती ही जा रही है, फिर वह दूसरे रास्ते की ओर जायेगा, फिर तीसरे रास्ते की ओर, हो सकता है घूम फिर कर उसी बिन्दु पर पहुंच जाय, जहां से उसने यात्रा प्रारम्भ की थी, समय गया, श्रम गया, और नतीजा कुछ नहीं निकला, जहां से चले थे, वहीं के वहीं रह गये।

और यही स्थिति जीवन की है, इसमें कोई दो राय नहीं कि सौ में से नब्बे लोग तो अन्दाज से जीवन यात्रा में चले जा रहे हैं, जो कार्य उनका भाग्योदय नहीं कर सकता, उसे किये जा रहे हैं, फिर जब हानि होने लगती है, कर्जा बढ़ने लगता है, तो कर्जे से निकलने के प्रयास में उस दल-दल में और अधिक फंसते जाते हैं, फिर यदि कोई हिम्मत करके नया व्यापार प्रारम्भ कर भी लें, तो क्या गारण्टी, कि वह सफल होगा ही ? जीवन ऐसी वस्तु नहीं है, कि उसे दांव पर लगाया जा सके, और यह याद रखने लायक बात है, कि आपके पीछे आपका पूरा परिवार है, उससे संबंधित जिम्मेदारियां हैं, जिसे पूर्ण करना आपका कर्त्तव्य है, यदि इसकी जानकारी हो जायेगी कि क्या कार्य आजीविका के संबध में, किस समय करना है, तो फिर बात ही निराली हो जाय, कर्म तो करना है, लेकिन यह कर्म रेगिस्तान में भटकने के समान नहीं होगा, यह कर्म तो जीवन पथ पर निश्चित दिशा-संकेत के आधार पर यात्रा होगी, और इस यात्रा का हर कदम आपको एक पूर्णता की ओर, भाग्योदय की ओर ले जायेगा, यह फर्क बहुत बड़ा फर्क है।

व्यक्ति की आजीविका

बड़े बुजुर्ग कह गये हैं, कि पुरुषार्थ केवल शारीरिक बल और शारीरिक सुन्दरता में ही नहीं है, पुरुषार्थ केवल

खतरनाक कार्य करने में ही नहीं है, पुरुषार्थ वास्तविक रूप से इस बात में निहित है, कि व्यक्ति अपने जीवन में सही तरीके से अपनी शक्तियों का उपयोग करते हुए धन किस प्रकार कमाता है, कितना कमाता है, कितनी सम्पत्ति एकत्र करता है, यह दुनियां का नियम है, और लोगों के पास केवल यही एक चश्मा है, जिससे वे दूसरे व्यक्ति को देखते हैं।

आजीविका का महत्व इसीलिए और भी अधिक बढ़ जाता है, कि यह जीवन का रीढ़-स्तम्भ है, यह सुदृढ़ हुआ तो दूसरे अंग अपने आप सही कार्य करने लगेंगे, पैसा है तो परिवार में भी, समाज में भी पूछ रहती है, इसीलिए तो किसी भी ज्योतिषी के पास जाते समय पहला प्रश्न आप यही पूछते हैं, कि मेरे आजीविका का आधार क्या होगा, और किस कार्य से उन्नति होगी ?

अब आपके ज्योतिषी महोदय ने बता दिया, कि कपड़े के व्यापार में उन्नति होगी, और यही आपके लिए भाग्योदयकारक है, सलाह मान कर आपने कपड़े का व्यापार किया, खूब परिश्रम किया, दस साल तक दौड़ धूप की, और नतीजा कुछ विशेष नहीं ऊपर से लाख रुपये का कर्जा और हो गया, भटकते-भटकते पूज्य गुरुदेव के पास आये, कि अब कोई उपाय बताएं, मेरी जन्मकुण्डली में अमुक ग्रह की अमुक स्थिति है, व्यापार का योग है, कपड़े का व्यापार उचित है, फिर हानि क्यों ? गुरुदेव ने उसकी जन्मपत्री देखी, उनके लिए क्या देखना था, एक निगाह फेरना ही काफी था, और उन्होंने कहा कि, अरे भाई! तुम्हारे लिए कपड़े का व्यापार ही उचित है, लेकिन कपड़े में भी सिर्फ "रेडीमेड" वस्त्रों का व्यापार ही ठीक है, उसने केवल एक काम किया, वह यह कि अपनी कपड़ों की दुकान में केवल रेडीमेड वस्त्रों का व्यापार शुरू किया, और केवल दो वर्ष में ही सारा कर्जा उतार दिया, अब दिल्ली में रेडीमेड वस्त्र विक्रेताओं में उसका नाम है।

यह स्थिति क्या स्पष्ट करती है कि एक मुख्य व्यापार में भी सौ शाखाएं होती हैं, उसमें कौन सी शाखा सही है ? जिससे पूर्ण उन्नति-भाग्योदय संभव हो।

एक परिचित मिश्रा जी गुरुजी के पास आते थे, और उनको किसी ने कह दिया, कि आप शिक्षा के द्वारा भाग्योदय प्राप्त करेंगे, अब मिश्रा जी अच्छे पढ़े लिखे तो थे ही, उन्होंने अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया, ट्यूशन भी करते थे, लेकिन महीने के अन्त में ३० तारीख को सब कुछ सफाचट, मानसिक तनाव निरन्तर बना रहता, जन्मपत्री बिल्कुल सही, तरह-तरह के रत्न पहिन कर के भी देख लिये, लेकिन नतीजा कुछ भी नहीं।

गुरुदेव ने कहा कि भाई मिश्रा, तुम स्वयं पढ़ा कर उन्नति नहीं कर सकते, तुम तो एक स्कूल खोल लो, और केवल स्कूल से संबधित प्रशासकीय कार्य करो, पढ़ाने के लिए दूसरे टीचर लगा दो, विश्वासी व्यक्ति थे उन्होंने कहा मान कर नौकरी छोड़ दी, और ट्यूशन-क्लासें प्रारम्भ कर दीं, अध्यापक लगा दिये, आज यह स्थिति है, कि चार शहरों में उनके १५ स्कूल चलते हैं, शिक्षा ही उनका क्षेत्र है, लेकिन कितना फर्क पड़ गया!

निखिल कम्प्यूटर—जीवन भाग्योदय प्रोग्राम

ऊपर दिये गये दो उदाहरणों के अलावा हजारों उदाहरण हैं, इसलिए जब पत्रिका कार्यालय में कम्प्यूटर स्थापित किया गया, और फलादेश का प्रोग्राम बनाया गया, तो इस महत्वपूर्ण पक्ष को ध्यान में रखते हुए पूज्य गुरुदेव से दिन-प्रतिदिन फलित ज्योतिष का रहस्य पत्रिका के ज्योतिष विभाग के ज्योतिषियों ने प्राप्त करना प्रारम्भ किया, और नित्य प्रति नये सूत्र फीड किये गये।

सम्पूर्ण जन्मपत्री का एक साथ विवेचन आवश्यक है, इसमें केवल जन्मकुण्डली अथवा दशा के आधार पर ही किसी व्यक्ति की आजीविका, भाग्योदय से संबंधित भविष्यफल कहना मूर्खता है, व्यक्ति को भटकाना है, भविष्य कथन ऐसा होना चाहिए, कि तुम निश्चित अमुक कार्य करो, मोटे-मोटे तौर पर आजीविका के संबंध में कहने से कुछ लाभ नहीं है।

क्या आपको जानकारी है, कि आजीविका अर्थात् धनोपार्जन व्यवसाय की ११३७८ शाखाएं है ? इस जीवन भाग्योदय प्रोग्राम से आपको यह जानकारी प्राप्त हो सकती है, कि आपके लिए क्या कार्य सही है ।

व्यापार में नाम का पूरा महत्व है, आप नौकरी कर रहे हैं, अपने नाम से साइड बिजनेस नहीं कर सकते, किसके नाम से साइड बिजनेस प्रारम्भ किया जाय, यह जानकारी भी यह विशिष्ट जीवन भाग्योदय प्रोग्राम पूर्ण रूप से दे सकता है।

अकेले व्यापार करने की क्षमता नहीं है, भागीदार बनाना ही पड़ेगा, तो आपका भागीदार आपके लिए कैसा रहेगा, क्या अमुक व्यक्ति के साथ भागीदारी निभ सकेगी ? क्या अमुक व्यक्ति आपको धोखा देगा ? पार्टनरशिप ऐसी होनी चाहिए कि दोनों पार्टनरों की ग्रह स्थितियां एक दूसरे के अनुकूल हों, संयोग ऐसा बने कि निरन्तर उन्नति हो, केवल **"जीवन भाग्योदय प्रोग्राम"** से आपके सामने दर्पण की भाँति स्थिति साफ हो सकेगी ।

व्यापार का नाम किस अक्षर से प्रारम्भ किया जाय, यह प्रश्न भी महत्वपूर्ण है, गलत नाम से कार्य प्रारम्भ करना बहुत बड़ी हानि दे सकता है ।

व्यापार अथवा नौकरी है तो बाधाएं आयेंगी ही, लेकिन यदि आपको यह जानकारी प्राप्त हो जाय, कि अमुक समय अर्थात् १५ जून ६२ से २७ जुलाई ६२ तक का समय खराब है, नये सौदे में हानि हो सकती है, अथवा सरकारी बाधा आ सकती है, इन्कम टैक्स, सेल्स-टैक्स की समस्या आयेगी, तो फिर आपको यह जानकारी प्राप्त होने पर आप उस संबंध मे सचेत रह कर कार्य कर सकते हैं, जिससे हानिकारक स्थिति कम से कम नुकसान पहुंचाएं, उस नुकसान को टालने का उचित उपाय कर सकते हैं, लेकिन यह जानकारी आवश्यक है, कि अमुक प्रकार की बाधा आयेगी, यह संभव है, और इस जीवन भाग्योदय प्रोग्राम से एक-दो नहीं, हजारों जन्मपत्रियों का विवेचन किया गया ।

जीवन भाग्योदय फलादेश कैसे प्राप्त करें

- इसके लिए यह आवश्यक है, कि आपके पत्रिका कार्यालय के कम्प्यूटर द्वारा आपकी शुद्ध जन्मपत्री बनी हो, अशुद्ध जन्मपत्री से शुद्ध फलादेश संभव ही नहीं है ।
- जन्मपत्री के संबंध में विवरण भेजते हुए स्पष्ट रूप से लिखें, कि मुझे फलादेश में **'जीवन भाग्योदय फलादेश'** विस्तार से चाहिए ।
- **'जीवन भाग्योदय फलादेश'** का पारिश्रमिक -२४०)रु० है, यह शुल्क जन्मपत्री निर्माण के उन शुल्कों से सर्वथा भिन्न है, जिनका विस्तृत विवरण पत्रिका के अप्रैल अंक में दिया गया है, और प्रपत्र भर कर भेजते समय स्पष्ट रूप से लिखें कि आपको यह फलादेश चाहिए ।

इससे आपको आने वाले समय में आपकी आजीविका चाहे वह व्यापार हो, अथवा नौकरी, उससे सम्बन्धित सभी प्रश्नों का स्पष्ट विवेचन किया जायेगा, और यह गाइड आपके लिए हर कदम पर सहायक होगी, जीवन निर्माण सही रूप से हो सकेगा ।

नोट : इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की विस्तृत जानकारी हेतु निम्न पते पर पत्र लिख कर सम्पर्क कर सकते हैं—

ज्योतिष विभाग

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी,

जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

यह साधना तो आनन्द साधना है

आनन्द भैरवी साधना

जो रूप, रंग, गन्ध, मादकता, प्रेम, रस, कामना, क्रीड़ा,
अहोभाव, सुगन्ध, सुषमा, सुरभि का स्वरूप है,
आद्या शक्ति देवी की यह आनन्द भैरवी क्रियात्मक स्वरूप है,
यह ऐसा आनन्द, अमृत फल है, जो जीवन को रस विभोर बना सकता है।

साधनाओं के मूल रूप से तीन स्वरूप हैं, १-वीर भाव साधना, २-भक्ति भाव साधना, ३-प्रेम भाव साधना, देवताओं के पूजन में सामान्य तौर पर साधक भक्ति भाव का प्रयोग करता है, निवेदन करता है।

वीर भाव साधना में साधक अपने अधिकारों की पूर्ति हेतु आह्वान करता है, वहीं प्रेम भाव में अपने आपको उस देवी शक्ति से जोड़ देता है, अपने सम भाव पर स्थापित कर लेता है, यह साधना सबसे सरल और सुन्दरतम स्वरूप वाली साधना है।

आनन्द भैरवी

आदिशक्ति देवी से शिव का प्रादुर्भाव हुआ, और शिव तथा शक्ति के संजोग से कुछ विशेष शक्तियां उत्पन्न हुई, जिनमें शिव भाव भी था, शक्ति भाव भी था, और इन शक्तियों की रचना एक महान मिलन के कारण हुई थी, जिसका आधार आनन्द तथा दिव्य भाव था, इसीलिए इन विशिष्ट शक्तियों मे रूप और सौन्दर्य के तीव्रतम स्वरूप प्रगट हुए, और इनके गुणों में, इनके प्रभाव में जहां शिव भाव जाग्रत रहा, वहीं शक्ति भाव तो साक्षात् रूप से था ही।

"**आनन्द भैरवी**" का स्वरूप अल्हड़ नदी की भांति है, क्योंकि इसमें शिवत्व है, निश्चिन्तता है, प्रसन्नता का मीठा जल तत्व है, दूसरी ओर इसमें देवी के सौन्दर्य का प्रत्येक अंश पूर्ण रूप से विद्यमान है, शारीरिक दृष्टि से यह सर्वांग-सम्पूर्ण है, "**रुद्रयामल तन्त्र**" में लिखा है, कि कलियुग में साधक तो अपने स्वार्थ स्वरूप, अपनी

इच्छा स्वरूप, अपनी सांसारिक कामनाओं की पूर्ति हेतु साधना करता है, उसे शिव तक आने की क्या आवश्यकता है, उसे तो मेरे स्वरूप "आनन्द भैरवी" में ही वे सभी सांसारिक सुख प्राप्त हो जाते हैं, और वही उनके लिए सरलतम रूप से साध्य है।

आदिशक्ति देवी की साधना करते समय साधक एक भक्ति भाव, समर्पण भाव, निवेदन भाव, दिव्य भाव, रखता है, वहीं आनन्द भैरवी की साधना प्रेम भाव साधना है, जिसमें उसे अपनी प्रिया, अपनी मित्र, रूप में सिद्ध किया जा सकता है, जब प्रिया रूप से कोई किसी को अपनाता है, तो वह उससे भेद नहीं रखता, अपनी सारी कमियों को खोल कर रख देता है, अपनी इच्छाओं के द्वार खोल देता है, और आनन्द भैरवी सहयोगी बनती है, हर क्षण उन सभी क्रियाओं को पूर्ण रूप से सम्पन्न कराने में, क्योंकि इसमें सिद्धि प्राप्त साधक प्रियतम बन जाता है, और प्रिया का तो कर्त्तव्य है, कि उसका प्रियतम हर दृष्टि से पूर्ण हो, उसके जीवन में आनन्द ही आनन्द हो, वह श्रेष्ठतम बन सके।

"परमानन्द तन्त्र" में आनन्द भैरवी के स्वरूप, व्याख्या एवं विधान के सम्बन्ध में विस्तार से लिखा गया है, आनन्द भैरवी शिव का अर्द्धनारीश्वर स्वरूप है, अत: जो साधक इसे सिद्ध कर लेता है, उसके साथ आनन्द भैरवी पूर्ण रूप से जुड़ जाती है।

खुले लहराते लम्बे केश, गोल चक्र समान, स्वर्ण के रंग समान दीप्ति देता हुआ चेहरा, जिसमें अलसाये से आनन्द तृप्ति भाव लिये बड़े नेत्र, दृष्टि में काम भाव, थोड़े मोटे अधखुले होंठ, शरीर में बल, ठोस संरचना, केवल एक अधोवस्त्र धारण किये हुए, आनन्द भैरवी का स्वरूप कैलाश कन्या का स्वरूप है, जिसमें शुद्धता, निश्छलता और प्रेम रस से सराबोर व्यक्तित्व है।

आनन्द भैरवी साधना

- जब साधक शक्ति को प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है, तभी तो उसके जीवन में आनन्द का सागर लहरा सकता है, और आनन्द भैरवी की साधना शक्ति और आनन्द दोनों का संयुक्त स्वरूप है।
- पीड़ा चाहे मन की हो अथवा तन की, पीड़ा का प्रभाव पूरे व्यक्तित्व पर, उन्नति पर, कार्यों पर पड़ता है, आनन्द भैरवी साधना जिसे प्रिया रूप में सिद्ध हो जाती है, उस साधक के मन तथा तन दोनों की पीड़ाओं का पूर्ण रूप से नाश करती है।
- आर्थिक दृष्टि से दु:खी व्यक्ति अपने जीवन में आनन्द के उपभोग की केवल कल्पना ही कर सकता है, लेकिन आनन्द भैरवी साधना से उसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से विशेष स्थिति प्राप्त होती है, जिससे वह जीवन के हर रूप का आनन्द ले सके।
- जो ज्यादा जानकार हैं, जो अपने को महा पंडित समझते हैं, तर्क के स्थान पर कुतर्क करते हैं, उन्हें यह साधना सिद्ध नहीं हो सकती, क्योंकि आनन्द भैरवी तो सरल निश्छल, समर्पित, व्यग्र, इच्छावान साधक को ही स्वीकार करती है।
- आनन्द भैरवी साधना पूर्ण रूप से सिद्ध हो जाने के पश्चात्, किसी भी संकट के समय, किसी भी कार्य के समय साधक ध्यान करता है, तो तत्काल उपस्थित होती है, और साधक को उस समस्या का समाधान प्रदान करती है।
- आनन्द भैरवी साधना से तीन शक्तियां कर्म शक्ति, इच्छा शक्ति, और ज्ञान शक्ति पूर्ण रूप से जाग्रत हो जाती है, जिससे साधक अपने जीवन में, प्रत्येक कार्य सरलता से सम्पन्न कर सकता है।
- आनन्द भैरवी साधक के जीवन से भय शब्द ही हटा देती है, जिससे साधक को राजकीय बाधा-भय, शत्रु भय, विश्वासघात भय, की चिन्ता ही नहीं रहती, शत्रु तो सहयोगी अथवा दास बन जाते हैं।

ग्रन्थो में इसे तांत्रिक साधना का स्वरूप दिया गया है, इसका तात्पर्य केवल इतना ही है, कि जीवन तंत्र में आनन्द प्राप्त करने हेतु की गई साधना है, प्राचीन समय

में मोक्ष प्राप्ति की साधनाओं पर विशेष बल दिया जाता था, उस समय युग अलग था, विचारधारा अलग थी, वर्तमान युग में जीवन में सुख प्राप्ति का इच्छुक साधक अपने लिए शुरू से ही मोक्ष साधना की ओर नहीं बढ़ सकता, उसके लिए जीवन का प्रत्येक सुख आवश्यक है, आज प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन को पूर्णता से भोगना चाहता है, सुख ग्रहण करना चाहता है, उसके लिए भैरवी चक्र साधना सर्वोत्तम साधना है।

भैरवी चक्र साधना में साधक को एक दृढ़ संकल्प बनाना पड़ता है, कि मैं हर हालत में, हर स्थिति में आनन्द भैरवी सिद्धि प्राप्त कर के ही रहूंगा, इस साधना में दीन-हीन भाव, याचना उचित नहीं है।

भैरवी साधना की सिद्धि "शिव और शक्ति" दोनों की ही सिद्धि है।

आनन्द भैरवी साधना विधान

भैरवी साधना शान्त मन से, हृदय में सुन्दर भावों को स्थिर कर प्रसन्न मन से, एकान्त स्थान में सम्पन्न करनी चाहिए, जहां साधना के समय किसी प्रकार का विघ्न न हो, साधक का मन बार-बार भटके नहीं।

भैरवी साधना में मूल रूप से चार पात्र विशेष रूप से आवश्यक हैं, साधक चार बड़े कटोरे ले सकता है, प्रत्येक पात्र की अलग-अलग पूजा है।

इसके अतिरिक्त **'आनन्द भैरवी यन्त्र'**, **'आनन्द भैरवी गुटिका'**, **'आनन्द भैरवी रस गन्ध'**, तथा **'इच्छामति मुद्रिका'** आवश्यक है, इसके अतिरिक्त **'१०८ भैरव बीज'** आवश्यक हैं।

यह साधना मूल रूप से चार शुक्रवार को अथवा चार चतुर्थी को सम्पन्न की जाती है।

साधना दिवस के दिन साधक लाल वस्त्र धारण करें, ऊनी आसन को जल से धोकर शुद्ध करें, यह साधना रात्रि का प्रथम प्रहर बीत जाने के पश्चात् अर्थात् १० बजे के बाद प्रारम्भ करें, इन चार पात्रों के अलावा एक जल से भरा पात्र, चावल, घिसा हुआ चन्दन अवश्य रखें, चारों पात्रों को क्रमशः चावल की ढेरी पर स्थापित कर सर्वप्रथम अपने हाथ में संकल्प कर "ॐ गुरुभ्यो नमः" से गुरु का ध्यान तथा "गं गणपतये नमः" से गणेश का ध्यान कर इष्ट देवता को प्रणाम करें, साधना प्रारम्भ करने की आज्ञा प्राप्त करें, लोटे में रखे जल से सब पात्रों की शुद्धि करें और इन पात्रों में आवश्यक द्रव्य भरें।

प्रथम पात्र में शहद, दूसरे पात्र में दूध का मिष्ठान, तीसरे पात्र में मीठा शर्बत, चौथे पात्र में ऋतु फल का रस भरें।

पूजन क्रम में सर्वप्रथम आनन्द भैरवी का ध्यान करें—

ध्यान मन्त्र

आनन्द भैरवीं देवी वराभयलसत्कराम्।
गौररूपां वरारोहां त्रिनेत्रां रक्तवाससम्॥
रक्तवर्णां महारौद्रीं सहस्रभैरवान्वितताम्।
ब्रह्माविष्णुमहेशाद्यै स्तूयमानां शिवां भजे॥

ये चार पात्र आनन्द, रूप, रस, और काम के स्वरूप हैं, सर्वप्रथम प्रथम पात्र का पूजन कर चन्दन चढ़ा कर इसके शहद में **'आनन्द भैरवी यन्त्र'** डाल दें, अब पुष्प चढ़ाएं तथा धूप और दीप अर्पित करें, तथा अपने पास रखे हुए १०८ भैरव बीजों को हाथ में ले कर निम्न मन्त्र का जप करते हुए एक-एक बीज पात्र के सामने अर्पित करें, आगे सभी पात्र पूजन में इन्हीं भैरव बीजों का प्रयोग और नियमों का पालन करें।

मन्त्र

॥ ॐ सुधादेवी विद्महे सुधा देवी धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्॥

अब दूसरे पात्र जिसमें दूध का मिष्ठान रखा हुआ है, उसमें **'आनन्द भैरवी गुटिका'** डालें, फिर उसका पूजन कर निम्न मन्त्र का जप करें और १०८ भैरव बीज चढ़ाएं।

मन्त्र

।। ॐ ह्रौं क्षों मांसं शोधय शोधय
ॐ ह्रौं क्षों स्वाहा ।।

अब साधना का तीसरा क्रम रसपात्र साधना है, इसमें भी विधान ऊपर लिखे विधानों की तरह ही है इस पात्र में **'आनन्द भैरवी रसगन्ध'** डालें फिर भैरव बीजों को पात्र के सामने निम्न मन्त्र जप करते हुए अर्पित करें–

मन्त्र

।। ऐं ह्रीं ब्लूं ऐं सौं ब्लूं सः सः सः
इमें मीनं शोधय शोधय स्वाहा ।।

अब काम पात्र का पूजन कर उसमें **"इच्छामति मुद्रिका"** डाल दें फिर भैरव बीजों को अर्पित करते हुए निम्न मन्त्र का जप करें—

मन्त्र

।। प्लुं न्लुं स्लुं ग्लुं म्लुं स्वाहा अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि महत्प्रकाशयुक्ते अमृत स्रावय स्रावय स्वाहा ।।

जब यह क्रम पूरा हो जाय तो आनन्द भैरवी का ध्यान करते हुए, अपनी इच्छाओं को स्पष्ट रूप से प्रगट करते हुए, क्रमबद्ध रूप से पात्र में रखा हुआ द्रव्य स्वयं प्रसाद के रूप में ग्रहण कर लें, इसलिए प्रत्येक पात्र में उतना ही द्रव्य रखें, जितना ग्रहण करने की क्षमता हो ।

अब साधक उसी स्थान पर नेत्र बन्द कर निश्छल हो कर आनन्द भाव से थोड़ी देर बैठा रहे, इस समय कुछ विशेष अस्पष्ट दृश्य दिखाई देते हैं, एक मार्ग दिखाई पड़ने लगता है, किसी साधक को वन-उपवन दिखाई देता है, किसी को कोई सौन्दर्य स्वरूप दिखाई देता है, इससे यह निश्चित हो जाता है, कि साधना सही दिशा की ओर अग्रसर है ।

साधना का यह क्रम चार शुक्रवार तक करें, प्रत्येक शुक्रवार को सामग्री वही रखनी है, पात्र वही रखने हैं, भैरव बीज वही रखने हैं।

तीसरे शुक्रवार तक स्थिति ऐसी बनने लगती है, कि साधक यह अनुभव करता है, कि वह साधना में अकेला नहीं बैठा है, कोई उसके पीछे खड़ा है, कुछ ध्वनियां सुनाई देने लगती हैं, एक सुगन्धित, आनन्दमय वातावरण बनने लगता है ।

चौथे शुक्रवार को साधना पूर्ण होते-होते साक्षात् आनन्द भैरवी अपने समस्त सौन्दर्य भाव के साथ प्रगट होती है, उस समय साधक अपनी प्रिया रूप में बनाने हेतु वचन बोले, भैरवी साधक का प्रस्ताव स्वीकार करती है, और उसे इच्छित वर देती है ।

इसके बाद जब भी साधक अपने किसी कार्य से, अपनी इच्छा हेतु आनन्द भैरवी का ध्यान करता है तो भैरवी तत्काल उपस्थित होती है, यह साधना वास्तव में तन्त्र साधना की ऐसी विशिष्ट साधना है, जो हर साधक अपने जीवन को पूर्ण रूप से सुखी भावमय बनाने के लिए सम्पन्न कर सफलता प्राप्त कर सकता है ।

सामग्री, जो आपकी साधनाओं में सहायक हैं

प्रस्तुत अंक में जिन साधनाओं का विवरण आया है उनसे सम्बन्धित सामग्रियों का विवरण निम्न है. आपको जिन सामग्रियों की आवश्यकता हो, केवल उसका विवरण पत्र में लिख कर हमें सूचित कर दें, हम वह सामग्री डाक व्यय लगा कर वी०पी० द्वारा भेज देंगे।

साधना नाम	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्यौछावर
कमला तन्त्र साधना	६	गणपति विग्रह	५१)रु०
		लघु नवग्रह यन्त्र	५१)रु०
		कमला माला	१५०)रु०
		१०८ कमल बीज	१०१)रु०
वेदों से लिये गये कुछ अनूठे प्रयोग—	१३	—	—
-भूत-प्रेत दुष्टात्मा निवारण प्रयोग	१४	२१ ऋत्वा तत्वं	६३)रु०
-बालकों के रोग दूर करने का प्रयोग	१५	१०८ कमल बीज	१०१)रु०
-अभीष्ट धन प्राप्ति प्रयोग	१५	सुदर्शन शंख	१२०)रु०
		श्रीयन्त्र का चित्र या छोटा ताम्र यन्त्र	२१)रु०
		सिद्धि माला	१२०)रु०
- रोग पीड़ा शान्ति प्रयोग	१६	अश्विनी कंकण	११०)रु०
अद्वितीय मणिमाला	१७	मणिमाला	२४०)रु०
वीर साधना	२१	वीर सिद्धि यन्त्र	१०५)रु०
		वीर सिद्धि माला	१२०)रु०
		शिव का चित्र	१०)रु०
हनुमान साधना	२४	रक्त चन्दन से निर्मित हनुमान मूर्ति	१५०)रु०
द्वादश यन्त्र साधना	२५	धातु का मन्त्र सिद्ध यन्त्र ताबीज-प्रत्येक	६०)रु०
आनन्द भैरवी साधना	३७	आनन्द भैरवी यन्त्र	६०)रु०
		आनन्द भैरवी गुटिका	४५)रु०
		आनन्द भैरवी रसगन्ध	२०)रु०
		इच्छामति मुद्रिका	३०)रु०
		१०८ भैरव बीज	१०१)रु०

रजि० नं० ३५३०५/८१ पोस्टल एल०आर०जे० २६६७/८६-८७

Scanned by CamScanner